त्रैमासिक पत्रिका

विप्र योग

अंक : 26, वर्ष 8
जनवरी-अगस्त 2022

प्रेरणास्त्रोत
स्व. रामू प्रसाद शर्मा

प्रबंध संपादक
नरेन्द्र तिवारी
9425205910

प्रधान संपादक
राजशेखर चौबे
7999957831

संपादक मंडल

सुयश शुक्ल
9179079711

डॉ. विवेक शर्मा
9131442491

हिमांशु तिवारी
9329422505

श्रीमती प्रणीता शर्मा
9993858759

प्रकाशन
विप्र भवन प्रबंध समिति
बजरंग नगर, समता कॉलोनी,
रायपुर (छ.ग.)
फोन - 0771-2534563

सहयोग राशि
रू. 20.00 मात्र प्रति अंक

संपादन - पद पूर्णतः अवैतनिक है।

मुद्रक
आकांक्षा प्रिन्टर्स
ब्राह्मणपारा, रायपुर (छ.ग.)
फोन नं. 9926820122

अनुक्रमणिका

क्रं.	विवरण		पृ.क्र
01	ब्रह्म जनाति ब्राह्मण	:	01
02	ब्राह्मण और ब्राह्मणत्व	:	02
03	संत पवन दीवान श्रद्धांजलि सभा एवं सम्मान समारोह	:	03-04
04	होली मिलन एवं महामूर्ख सम्मेलन	:	05-06
05	हमर बोली हमर भाखा	:	06
06	शहीद लेफ्टिनेंट राजीव पांडेय श्रद्धांजलि कार्यक्रम	:	07
07	प्रान्तीय अखण्ड ब्राह्मण समाज द्वारा नववर्ष पर वीर सैनिक व स्वरूपा सम्मान	:	08
08	आरक्षण एवं कर व्यवस्था के माध्यम से लोकव्यवहार पर कटाक्ष	:	09
09	विप्र प्रीमियर लीग	:	10-11
10	राज्य स्तरीय ओपन शतरंज स्पर्धा का आयोजन	:	12
11	सोहागा मंदिर धर्मशाला निर्माण का भूमिपूजन	:	13
12	छ.ग. योग आयोग के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा का अखंड ब्राह्मण समाज द्वारा सम्मान	:	13
13	विप्र युवा समिति द्वारा महारूद्राभिषेक में विश्व शांति की प्रार्थना	:	14
14	मां मै निःशब्द हूँ	:	15
15	पुत्रवत् की कलम से	:	16
16	मां सी मेरी... दीदी बाई	:	16
17	सभी मां और बेटियों को समर्पित	:	16
18	समाज में वरिष्ठजनों की भूमिका	:	17
19	विप्र कॉलेज में वाणिज्य संकाय का तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबीनार	:	18-20
20	एक निवेदन : छत्तीसगढ़ी ब्राह्मण समाज के सदस्यों क्या आप जानते है?	:	21
21	अंतर महाविद्यालयीन योग प्रतियोगिता उद्घाटन समारोह	:	22
22	विप्र कॉलेज में योग एवं आहार विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला	:	23-24
23	उड़ान	:	25
24	बौद्धिक संपदा अधिकार का संरक्षण पर एक दिवसीय वेबीनार	:	26
25	विप्र महिला मंडल का महिला दिवस पर कार्यक्रम	:	27
26	ज्योर्तिमयानंद जी एवं कानिटकर जी के साथ योग समागम का सार	:	28
27	गांधी हमारे जीवन में	:	29
28	श्रद्धांजलि	:	30

संपादकीय

कोरोना काल के संक्रमण के उपरांत विप्र योग का दूसरा अंक आपके हाथों में हैं। कोरोना से हम उबर चुके हैं यह कहना उचित नहीं होगा कोरोना तो समाप्त नहीं हुआ है पर उसका डर समाप्त हो गया है। अभी भी कोरोना से बचाव जरूरी है क्योंकि देश में यह पुनः अपने पैर पसार रहा है। हमें अभी भी मास्क, सेनेटाइजर का उपयोग व देह से दूरी का पालन करना है। इस दौरान हमारे ऊर्जावान व यशस्वी साथी ज्ञानेश शर्मा जी की सक्रियता व भागीदारी उल्लेखनीय रही। उन्होंने अध्यक्ष पद संभालते ही योग आयोग को पूरी तरह चार्ज कर दिया है। प्रदेश भर में उनके नेतृत्व में योग पर 100 से अधिक सफल कार्यक्रम आयोजित किए गए। उन्हें हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

इस दौरान संत पवन दीवान की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा व सम्मान समारोह भी आयोजित किया गया। समाज के गौरव शहीद राजीव पांडे की 60 वीं जयंती पर भी एन.सी.सी. ऑफिस परिसर में कार्यक्रम संपन्न हुआ। महापौर ट्रॉफी चौथा प्रीमियर लीग रात्रिकालीन क्रिकेट चैंपियनशिप का खिताब आजाद चौक ब्राह्मण पारा ने हासिल किया। राज्य स्तरीय ओपन शतरंज स्पर्धा का भी सफल आयोजन किया गया। विप्र कॉलेज में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का शानदार कार्यक्रम संपन्न हुआ। विप्र महिला मंडल द्वारा महिला दिवस पर पंडित आर.डी. तिवारी स्कूल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। साथी अविनाश शुक्ला जी के मार्गदर्शन में होली मिलन व महामूर्ख सम्मेलन का सफल आयोजन संपन्न हुआ। इसे लोगों द्वारा काफी पसंद किया गया। इन सभी कार्यक्रमों व विप्र समाज द्वारा आयोजित अन्य कार्यक्रमों की पूरी जानकारी इस अंक में संजोई गई है।

ब्राह्मण दान देने में हमेशा आगे रहे हैं और छत्तीसगढ़ी विप्र समाज भी अपवाद नहीं है। हमारे समाज के लोगों ने बढ़ चढ़कर दान दिए हैं। दान देने, उपकार करने व गरीब को रोटी खिलाने से बड़ा सुख कुछ भी नहीं है। हमें आर्ट ऑफ लिविंग के साथ-साथ ''आर्ट ऑफ गिविंग'' को भी अपनाना चाहिए। इसी कड़ी में सोहागा मंदिर धर्मशाला का निर्माण किया जा रहा है। इसका भूमि पूजन 18 फरवरी 2022 को किया गया। इस महत्वाकांक्षी परियोजना में आप सबका सहयोग अपेक्षित है। इस दौरान समाज के दिवंगत सदस्यों की सूची भी श्रद्धांजलि स्तंभ में दी गई है। उन सब को सादर नमन। विप्र समाज के सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि वे विप्र योग पत्रिका में अपनी भागीदारी बढ़ाएं। वे हमें सार्थक सुझाव प्रेषित करें ताकि हम इसे और बेहतर बना सकें। इस अंक में मेरे आलेख ''ब्राह्माण और ब्राह्मणत्व'' के अलावा कई सार्थक आलेख हैं। इस अंक को तैयार करने के लिए संपादकीय टीम के सभी सदस्यों का आभार। इस अंक पर आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार है।

राजशेखर चौबे

ब्रह्म जानाति ब्राह्मण

यस्क मुनि के अनुसार ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः यानी जो ब्रह्म को जानता है वही ब्राह्मण है ब्राह्मण सनातान धर्म व्यवस्था का एक वर्ण है और कर्म से इस संस्कार को धारण करता है। ब्राह्मण का निर्धारण अब माता-पिता की जाति के आधार पर होने लगा है लेकिन स्कन्दपुराण में षोडशोपचार पूजन के अंतर्गत अष्टम उपचार में ब्रह्मा द्वारा नारद को यज्ञोपवीत के आध्यात्मिक अर्थ में बताया गया है,

जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारै द्विज उच्यते। विद्यया याति विप्रः श्रोतिरस्त्रिभिरेवच।।

अतः आध्यात्मिक दृष्टि से यज्ञोपवीत के बिना जन्म से ब्राह्मण भी शुद्र के समान ही होता है। मैं समझता हूँ कि इसे प्रकारांतर से समझना होगा। वैदिक व्यवस्था प्रागैतिहासिक काल से चली आ रही है और उसमें वर्ण व्यवस्था कर्म के आधार पर बनाई गई थी। यानी व्यक्ति जो काम करता था, उसे उसी वर्ग में रखा जाता था। कहने का आशय यह है कि पढ़ाई-लिखाई, धर्म-आध्यात्म, संस्कार-शिक्षा, नैतिकता-व्यवहार से जुड़े लोगों को ब्राह्मण वर्ण में रखा गया था, उस व्यवस्था को आज से संदर्भ में हम ऐसे समझ सकते हैं कि जो पढ़ाए वो शिक्षक, जो खेल व कौशल की शिक्षा दे वो प्रशिक्षक, जो राष्ट्र की रक्षा करने सीमा पर जाए वो सैनिक आदि... वर्ण व्यवस्था जन्म पर नहीं बल्कि कर्म पर आधारित थी जो कालांतर में जाति व्यवस्था के रूप में इसलिए बदल गई क्योंकि पिता की विरासत पुत्र या पुत्रों के माध्यम से आगे बढ़ाने की परम्परा स्थापित हो गई।

वास्तव में वैदिक परम्परा लोकतांत्रिक पद्धति पर आधारित थी, जिसमें ज्ञान-विज्ञान की जोत प्रज्जवलित करने का अधिकार सभी को था। वेदों में 16 प्रकार के ब्राह्मणों का जिक्र है, जिसका संबंध जीवन के 16 क्षेत्रों या 16 संस्कारों से है। इससे एक बात साफ ज्ञात होती है कि हमारी व्यवस्था कितनी वैज्ञानिक थी कि जीवन में प्रत्येक बदलाव को दिशा देने के लिए एक शिक्षक की व्यवस्था थी। ब्राह्मण इसी कारण अग्रणी कहलाए क्योंकि वे पूरी व्यवस्था के ध्वजवाहक थे और बाल अवस्था से लेकर वृद्धावस्था तक प्रत्येक व्यक्ति का संस्कार सुनिश्चित कर उसकी प्रतिभा को निखारने का काम करते थे ताकि वो जीवन के अंत तक राष्ट्र या समाज के लिए उपयोगी बना रहे।

ब्राह्मणों की इस व्यवस्था को हमें समझने की जरूरत है। आज जात-पांत, धर्म, भाषा और क्षेत्र के आधार पर कटुता पैदा करने की जो कोशिश की जा रही है, उसे वैदिक व्यवस्था की वैज्ञानिकता से दूर एक समृद्ध समाज की रचना की जा सकती है।

तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।। भावार्थ : सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते है, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है, और यज्ञ विहित कर्मो से उत्पन्न होते है। कर्मसमुदाय को तू वेद से उत्पन्न और वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ जान।

सुयश शुक्ला

ब्राह्मण और ब्राह्मणत्व

मै लड़की हूँ लड़ सकती हूँ और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसे तमाम नारों के बाद भी फोर्ब्स की अरबपतियों की टॉप 20 लिस्ट में देश की आधी आबादी को केवल एक स्थान मिला है। क्या उनकी लड़ाई केवल पति और घरवालों तक ही सीमित कर दी गई है ? द इकॉनामिस्ट की खबर, जो फेक नहीं है, के अनुसार अडोबी, अल्फाबेट, आई बी एम, मैच ग्रुप (टिंडर), माइक्रोसॉफ्ट, ट्विटर और ओनलीफैंस के सी ई ओ में क्या समानताएं है? इन सभी सात कंपनियों के बिग बॉस नहीं, बॉस भारतीय मूल के हैं। इन सभी सात प्रमुखों में एक समानता और है कि सभी अगड़े हिंदू है और इनमें से चार ब्राह्मण हैं यानी बहुमत के आंकड़े से भी ऊपर । फोर्ब्स की 2021 की अरबपतियों की टॉप 20 की सूची में देश की आबादी में एक प्रतिशत के हिस्सेदार वैश्य समुदाय के बारह लोग नमूदार हुए है। इसमें शामिल एकमात्र महिला भी इसी समुदाय से है। इस सूची में कोरोना वैक्सीन के निर्माता सहित तीन पारसी भी शामिल है। क्या कोरोना वैक्सीन के कारण ही वे इस सूची में स्थान बना सके हैं यह शोध का विषय हो सकता है। पिछड़े वर्ग से इकलौते शिव नाडर तीसरे नबंर पर है जो दक्षिण भारत से आते हैं जहां अगड़े और पिछड़े में भेद करना हम उत्तर भारतीयों के लिए कठिन होता है। क्या फोर्ब्स की अरबपतियों की टॉप 20 लिस्ट में व विदेशी कंपनियों में आरक्षण की मांग रखी जा सकती है। इस पर गंभीरता पूर्वक विचार किया जाना चाहिए। इस सूची में देश के सबसे बड़े परोपकारी अजीम प्रेमजी भी हैं जिन पर हमें गर्व है और इस सूची में वे अकेले मुस्लिम है।

अमेरिका की सात बड़ी कंपनियों में से चार के प्रमुख ब्राम्हण क्यों है और देश में हमारे पिछड़ने के क्या कारण हो सकते है-

पहला - श्रेय। इसका श्रेय इन सी ई ओ की तुलना में भारतीय शासन व्यवस्था और देश के कर्णधारों को अधिक है जिन्होने उन्हें देश छोड़ने के लिए मजबूर किया। **दूसरा** – यहां भले ही हम अपनी टांगों पर खड़ा होना न जानते हों लेकिन दूसरों की टांग खींचने में हम निष्णात है। **तीसरा** - ब्राह्मणत्व के बोझ तले दबे रहते है। ब्राह्मण होने का दंभ प्रायः हम पर हावी रहता है। **चौथा** – हम 25 उपवर्गों में बंटे हुए हैं और सभी अपने को श्रेष्ठ साबित करने की होड़ में लगे रहते है।भगवान परशुराम ने क्षत्रियों का विनाश किया इसीलिए हम ब्राह्मण अपने आप को भगवान राम के बदले परशुराम के वंशज कहलाना पसंद करते हैं जबकि दोनों में शायद ही कोई अंतर है। देश के बाहरी जग में हमारी काबिलियत जगजाहिर है और हमारे विरोधी भी इसे स्वीकारते है। देश में जहां पर भी आरक्षण नहीं है, वहां हमने अपना झंडा गाड़ा है। देश में केवल 3.7 प्रतिशत आबादी ब्राह्मणों की है फिर भी पिछले पंद्रह वर्षो में सुप्रीम कोर्ट में एक चौथाई जज ब्राह्मण रहे है। देश को मिले साइंस के चार नोबेल पुरस्कार में से तीन तमिल ब्राह्मणों को मिले है। भले ही हम साइंस और को रमन इफेक्ट को न समझते हो लेकिन इतना अवश्य समझते है कि हमें इन वैज्ञानिकों पर गर्व करना है।

राजशेखर चौबे

छत्तीसगढ़ियों के लिए भगवान स्वरुप संत पवन दीवान —:

डॉ. चरणदास महंत

श्रद्धांजलि सभा एवं सम्मान समारोह विप्र भवन में आयोजित

3 मार्च संस्कृति विभाग छत्तीसगढ़ शासन के सौजन्य से छत्तीसगढ़ी ब्राम्हण समाज के तत्वावधान में प्रशासनिक भवन प्रबंधन समिति द्वारा आयोजित संत पवन दीवान श्रद्धांजलि कार्यक्रम एवं सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. चरणदास महंत (अध्यक्ष छत्तीसगढ़ विधानसभा) की गरिमामय उपस्थिति एवं बृजमोहन अग्रवाल विधायक पूर्व मंत्री की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

संत कवि पवन दीवान को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डॉ. चरणदास महंत ने कहा कि संत विप्र पवन दीवान छत्तीसगढ़िओं के लिए भगवान स्वरूप है । क्योंकि सरल और सहज व्यक्ति के धनी संत पवन दीवान ने छत्तीसगढ़ के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया। उनकी पीड़ा थी, कि छत्तीसगढ़ में एक कमी है स्वाभिमान की।

मुझसे सही नहीं जाती ऐसी चुप्पी वर्तमान की। और आज भी ये चुप्पी कायम है। पवन दीवान जी को सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो उनके आदर्शो पर चलकर और निर्भय होकर चुप्पी तोड़कर छत्तीसगढ़ का निर्माण करें। संत कवि पवन दीवान की स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभाएं एवं सम्मान समारोह राज्य या राष्ट्रीय स्तर तक विस्तार करने की आवश्यकता है। क्योंकि राष्ट्र में छत्तीसगढ़ की पहचान दिलाने वाले संत कवि पवन दीवान ही थे। इस अवसर पर बृजमोहन अग्रवाल जी ने कहा कि छत्तीसगढ़ के निर्माण के लिए अलख जगाने वाले पवन दीवान जी ही थे।

जिन्होने बैलगाड़ी में पूरे छत्तीसगढ़ का भ्रमण किया। उनके सहज एवं सरल व्यक्तित्व का ही जादू था कि छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के लिए छत्तीसगढ़िया एक जुट हुए। आने वाले पीढ़ी को उनके जीवन के बारे में बताकर समाज और राष्ट्र के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकते है। इस अवसर पर पूर्व चुनाव आयुक्त सुशील त्रिवेदी, वनबल प्रमुख राकेश चतुर्वेदी, एजाज ढेबर (महापौर नगर पालिक निगम) प्रमोद दुबे (सभापति नगर पालिक निगम) ने भी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पवन दीवान जी से जुड़े अपने संस्मरण सुनाए। इस अवसर पर प्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि नवदीप सूरदीप एवं डॉक्टर सत्यभामा आडिल का पवन दीवान स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

इसके लिए उन्हें सम्मान पत्र, स्मृति चिन्ह, शाल, श्रीफल एवं 21000 रूपये प्रदान किया गया। इसके पूर्व अतिथियों का स्वागत करते हुए छत्तीसगढ़ योग-आयोग के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल की मंशा के अनुरूप एवं छत्तीसगढ़ शासन के वरिष्ठ मंत्री, ब्राह्मण समाज के मार्ग-दर्शक रविन्द्र चौबे की प्रेरणा से श्रद्धांजलि सभा एवं सम्मान समारोह का आयोजन विगत 4 वर्षो से किया जा रहा है। ताकि संत कवि पवन दीवान की स्मृति को चिर स्थाई बनाकर उनसे सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा लेते रहे। इससे पूर्व कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें प्रमुख रूप से नवदीप सूरदीप, मीरअलीमीर, रमेश कुशवाहा, रामेश्वर वैष्णव, किशोर तिवारी, नीलूमेघ, चंद्रशेखर शर्मा, राजेश तिवारी एवं भारत त्रिवेदी ने काव्य पाठ किया। अंत में आभार प्रदर्शन विप्र सांस्कृतिक भवन समिति के अध्यक्ष नरेंद्र तिवारी ने किया। इस अवसर पर मृत्युंजय दुबे, विभा तिवारी, कुसुम शर्मा, डॉक्टर उषा दुबे, व्यासनारायण शुक्ला, अशोक दीवान, अविनाश शुक्ला, आनंद पांडेय, डॉक्टर ध्रुव पांडेय, संजय दीवान, प्रकाश तिवारी, अनुराग पांडेय, नटराज शर्मा, राजशेखर चौबे, सहित ब्राह्मण समाज के सदस्य एवं छत्तीसगढ़ के साहित्यकार उपस्थित थे।

फाग गीत–नृत्यों से झूम उठे

विप्र भवन में हुआ महामूर्ख सम्मेलन

20 मार्च 2022 रविवार को विप्र भवन समता कालोनी में महामूर्ख पद अलंकरण एवं होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इसमें पूर्व मंत्री एवं वर्तमान विधायक बृजमोहन अग्रवाल तथा विधायक विकास उपाध्याय को महा मूर्खाधिराज का ताज पहनाया गया। इस अवसर पर सांसद सुनील सोनी, योग आयोग के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा, युवा नेता योगेश तिवारी, विप्र भवन प्रबंध समिति के अध्यक्ष नरेन्द्र तिवारी, उपाध्यक्ष अशोक दीवान, संजय दीवान, कर्नल सुनील मिश्रा मंचासीन थे। कार्यक्रम के सूत्रधार अविनाश शुक्ला सहित समारोह के विशिष्ट जनों ने रंगपर्व पर भेदभाव रहित खुशी का रंग जन मन में बिखेरते रहने का संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन विजय मिश्रा ने किया।

अब तो बुढ़ापा आयो रे... **वृन्दावन में श्याम खेलय होरी...** **जय जोहार संगवारी हो...**

कार्यक्रम में माननीय राष्ट्रपति द्वारा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत श्री राकेश तिवारी जी की प्रस्तुतियों के साथ पंखिड़ा तू उड़ के जाना पावागढ़रे के सुप्रसिद्ध गायक राजेश मिश्रा, संगीत नाट्य अकादमी पुरस्कार से अलंकृत राकेश तिवारी ने मजेदार फाग से दर्शकों को भाव विभोर कर दिया।छत्तीसगढ़ी लोक कला के प्रति आकर्षण के चलते नाचा मंडली के साथ अपना नाता जोड़ लिया, उन्होनें एक छत्तीसगढ़ी बालकथा अपनी दादी से सुनी थी, उसको आधार बनाकर छत्तीसगढ़ी नाचा शैली में राजा फोकलवा नामक नाटक रचा, जिसके अब तक लगभग 130 प्रस्तुतियां छत्तीसगढ़ और अन्य प्रदेशों में हो चुकी है।

उनके द्वारा छत्तीसगढ़ के पारंपरिक लोक धुनों को आधार बनाकर रायपुर के नगर घड़ी में हर घंटे बजने के लिए 24 धुनों की रचना की गई है, जिसके लिए उनका नाम लिम्का बुक आफ रिकॉर्ड्स में भी दर्ज हुआ है।

आह! इस बार की होली कुछ अलग ही आनंददायी रही, फाग एवं जस गीतों का समागम के साथ क्या नेता, क्या अभिनेता, क्या लोक और क्या पदाधिकारी सब के सब रंगो में सराबोर थे। यह होली जिसने भी मनाई उसने न तो पूर्व में ऐसी होली मनाया होगा और उसकी आगे भी इससे बेहतर मनाने की ईच्छा होती रहेगी। अनोखी पहेलियों, "करिया हे पर कौआ नो हे, लंबा हे पर सांप नो है, तेल चढ़े पर हनुमान नो हे, फूल चढ़े पर भगवान नो हे।। चोटी ।।" ने तो एक समा ही बांध दिया था, जिसके उत्तर भी निराले ही थे। अब बताईए क्या ऐसी होली पहले मनाई थी ? अगले वर्ष ऐसी या इससे बेहतर होली में फिर मिलेंगे....

हमर बोली हमर भाखा — नन्दकिशोर शुक्ल

छत्तीसगढ़िया नेता मन ला परबुधिया काबर कहे जात हे ? का, एखर- सेती के छत्तीसगढ़ में रहवइया जम्मो दू करोड़ 80 लाख मनखेमन ला हमर दाऊजी ? छत्तीसगढ़िया कहत हें? खाली इहां रहे भर ले बंगाली, पंजाबी, उड़िया, गुजराती, मराठी, बिहारी, सिन्धी जइसे कोनो भी भासा-भासी या संस्किरीति वाला होय, कइसे हो जाहय ? छत्तीसगढ़िया ? का अइसन हे परिभाषा माटीपूत के देस दुनिया के कोनो कोना में माने जाथे? जदि दाऊजी या दाऊजी के कोनो परिवारिक बंगाल, पंजाब, गुजरात या महाराष्ट्र में रहे लगही तब का उंखर चिन्हारी बदल जाहय ? ओ बंगाली, पंजाबी, गुजराती, मराठी कहाय लगहीं? सईत माटीपूत के उंखर अइसन हे गड्डमड्ड समझ के कारन उंखर सरकार छत्तीसगढ़ के छत्तीसगढ़ी असन छत्तीसगढ़ के कोनो भी मूल-महतारी भाषा ला महतारी-भाषा मन बेच्च नइ करय। तभे तो छत्तीसगढ़ी में पढ़ाई-लिखाई करातेच्च नई हें, हिन्दी-अंगरेजी माधियम ला पोट्ठ करत हे। महतारी भासा में पढ़ाई-लिखाई ला भुखहा मारत हे। छत्तीसगढ़ में रहवइया सबो झन छत्तीसगढ़ वासी हो सकत हें सबो झन छत्तीसगढ़िया कइसे हो जाहयँ? अरे, जेखर दू ठी अलग-अलग भाषा-संस्किरीति-परम्परा-इतिहास होहय ओखर ए ठी चिन्हारी कइसे होहय? एक महतारी के तो कई ठन लईका हो सकत हें, फेर एक लइका के कई ठन महतारी कइसे हो सकही?

(पढ़व झारखंड के जुन्ना सांसद शैलेन्द्र महतो के विचार अऊ बिडियो में सुनव विचार हमर मुखमन्तरी बघेल जी के.)...

शहीद लेफ्टिनेंट राजीव पांडेय (वीरचक्र) की 60वीं जयंती पर 11 अप्रैल 2022 को एन.सी.सी. छत्तीसगढ़ द्वारा श्रद्धांजलि कार्यक्रम व उनके परिजनों का सम्मान

धन्य है छत्तीसगढ़ की पावन धरा, जिसने ऐसे माटी पुत्र को जन्म दिया है जिन्होंने घर परिवार के दायित्वो से ऊपर उठकर देश की एकता अखंडता और पूरे देश को अपना परिवार मानते हुए, राष्ट्रप्रथम के सिद्धांत पर चलते हुए, देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हुए मात्र 25 वर्ष की युवा अवस्था में विश्व के सबसे ऊंचे और दुर्गम रणक्षेत्र, 21 हजार फिट ऊंचे सियाचिन ग्लेशियर में आपरेशन मेघदूत के तहत दुश्मनों से देश की सरहदों की रक्षा करते हुए बलिदान को प्राप्त किया। जिनके देश के प्रति उच्चतम योगदान और शौर्य के प्रदर्शन का सम्मान करते हुए भारत सरकार ने उन्हें वीरचक्र से मरणोपरांत सम्मानित किया। ऐसे वीरों की शौर्य गाथा को याद करते व शहादत पर गर्व करते हुए एन.सी.सी. छत्तीसगढ़ द्वारा वीर चक्र प्राप्त शहीद लेफ्टिनेंट राजीव पांडेय जी की 60वीं जयंती के उपलक्ष्य पर श्रद्धांजलि व उनके परिजनों का सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया।

विप्र समाज का शत्-शत् नमन है वीर शहीदों को... जय माँ भारती की

प्रान्तीय अखण्ड ब्राह्मण समाज द्वारा नववर्ष पर वीर सैनिक व शक्तिस्वरुपा सम्मान

03 अप्रैल. छ.ग. प्रा. अ. ब्राह्मण समाज द्वारा हिंदू नववर्ष एवं सम्मान समारोह का आयोजन पं. योगेश तिवारी संस्थापक व श्रीमती भारती किरण शर्मा प्रांताध्यक्ष के दिशा निर्देशन में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विकास उपाध्याय विधायक (संसदीय सचिव छ.ग. शासन) अध्यक्षता ज्ञानेश शर्मा (योग आयोग अध्यक्ष), विशिष्ट अतिथि प्रमोद दुबे (सभापति नं.नि. रायपुर), मृत्युंजय दुबे (पार्षद), व श्रीमती मीनल छगन चौबे (नेता प्रतिपक्ष न.नि. रायपुर), प्रदीप नारायण तिवारी (पूर्व पुलिस महानिरीक्षक) के आतिथ्य में भव्य आयोजन में 25 वीर सैनिक, अफसरों व शहीद हुए वीरों के परिवारों का सम्मान किया गया। साथ ही 11 मातृशक्तियों का विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्यो के लिए व बाल सिद्धार्थ शर्मा बिलासपुर 6 वर्ष का विलक्षण योग्यता सम्मान से सम्मानित किया गया। सभी अतिथियों ने देश के रक्षकों व मातृशक्तियों के प्रति अपने आदरभाव प्रगट करते हुए उन्हें नमन किया। चैत्र नवरात्रि पर्व पर 51 कन्याओं के पद प्रच्छालन कर विधिविधान से कुंवारी कन्या पूजन कर श्रृंगार सामग्री भेट की गई। शाम को 500 दीपक से सुशोभित दीप प्रज्वलित कर भव्य आरती धर्म उद्घोष व हिंदू धर्म ध्वजा वितरण किया गया। दुर्ग, भिलाई, कोरबा, महासमुंद, भाठापारा, व विभिन्न जिलों से आये सभी पदाधिकारियों का भी कार्यक्रम में सिरकत करने पर सम्मान किया गया। इस सम्मान समारोह में मुख्य रूप से निशा तिवारी, प्रकाश दीवान, हितेश दीवान, सरिता तरूण शर्मा, सुनीता मिश्रा, सरिता दुबे, सीमा दीवान, पूर्णिमा तिवारी, विजय लक्ष्मी शर्मा, रश्मि शर्मा, उषा शास्त्री, वन्दना तिवारी, संध्या तिवारी, प्रीति गौराहा दिव्या, प्राची, विभा तिवारी, पं. मेघराज तिवारी, सूर्या पंडित,

ईश्वर शर्मा, कमलेश शर्मा, गौरव दुबे, प्रकाश दुबे, रोशन शर्मा, उमेश मिश्रा, रानी दुबे, श्यामा चौबे, सत्यप्रकाश दाश, हेमलता शुक्ला, मनीषा दुबे, अल्का दीवान, मनीषा तिवारी, अनामिका चौबे, विभिन्न जिले के जिलाध्यक्ष व अन्य पदाधिकारी तथा गणमान्य लोगो की उपस्थिति रही, सभी के प्रति प्रदेशाध्यक्ष ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

आरक्षण एवं कर व्यवस्था के माध्यम से लोकव्यवहार पर कटाक्ष (कथानक रूप)

आदित्य शर्मा

सरकार द्वारा दी जा रही राहत पर एक अर्थशास्त्री की सटीक व्याख्या! राहत पैकेज को ऐसे समझे। एक बार 10 मित्र जिनमें कुछ फटेहाल, कुछ ठीक ठाक और कुछ सम्पन्न लग रहे थे, एक ढाबे में खाना खाने गए। बलि आया 100/-। 10/- की थाली थी। मालिक ने तय किया कि बिल की भागीदारी देश की कर प्रणाली के अनुरूप ही होगी। इस प्रकार - पहले

4 बेहद गरीब (बेचारे) .... फ्री 5 वाँ गरीब ...1/- 6 ठां कम गरीब ... 3/-
7 वाँ निम्न मध्यम वर्ग 7/- 8 वाँ मध्यम वर्ग ...12/- 10 वाँ अति उच्च वर्ग ...59/-

दसो मित्रों को ये व्यवस्था अच्छी लगी और वो उसी ढाबे में खाने लगे।कुछ समय तक रोज इन दसों को आते देख कर ढाबे का मालिक बोला - आप लोग मेरे इतने अच्छे ग्राहक हैं सो मैं आप लोगों को टोटल बिल में 20/- की छूट दे रहा हूँ।

अब समस्या ये कि इस छूट का लाभ कैसे दिया जाए सबको? पहले चार तो यूँ भी मुफ्त में ही खा रहे थे।एक तरीका ये था कि 20/- बाकी 6 में बराबर बाँट दें तो भी बात नहीं बन पा रही थी, अगर ऐसा करते तो ऐसी स्थिति में पहले 4 के साथ 5 वाँ भी फ्री हो जाता और 5वाँ रू. 2.33/- और 6ठां 0.67/ घर भी ले जा सकते थे मुफ्त खाने के अलावा। पर ढाबा-मालिक ने ज्यादा न्याय संत तरीका खोजा।नयी व्यवस्था में अब पहले 5 मुफ्त खाने लगे।

6 ठां, 3 की जगह 2/- देने लगा ... 33% लाभ। 7 वां, 7 की जगह 5/- देने लगा ... 28% लाभ।
8 वां, 12 की जगह 9/- देने लगा... 25% लाभ। 9 वां, 18 की जगह 14/- देने लगा... 22% लाभ।
10 वां, 59 की जगह 49/- देने लगा ... सिर्फ 16% लाभ।

बाहर आकर 6 ठां बोला, मुझे तो सिर्फ 1/- का लाभ मिला जबकि वो पूंजीपति 10/- का लाभ ले गया। 5 वां जो आज मुफ्त में खा के आया था, बोला वो मुझसे 10 गुना ज्यादा लाभ ले गया। 7 वां बोला, मुझे सिर्फ 2 /- का लाभ और ये उद्योगपति 10/- ले गया। पहले 4 बोले, जो कि मुफ्त में खा रहे थे... अब तुमको तो फिर भी कुछ मिला हम गरीबों को तो इस छूट का कोई लाभ ही नहीं मिला।

ये सरकार सिर्फ पूंजीपति, उद्योगपति व सम्पन्न व्यक्ति के लिए काम करती है... मारो... पीटो... फूंक दो... इसको और सबने मिल के दसवें को पीट दिया। यह सम्पन्न व्यक्ति (10वां) पिटपिटा के इलाज करवाने सिंगापुर, आस्ट्रेलिया चला गया। अगले दिन वो ना ही उस ढाबे में खाना खाने आया और न ही लौटकर भारत आया। और जो 9 थे उनके पास सिर्फ 40 रू. थे जबकि बिल 72 रू. का था।

मित्रों अगर हम लोग उन बेचारे सम्पन्न लोगों को यूँ ही पीटेंगे तो हो सकता है वो किसी और ढाबे पर खाना खाने लगे (दूसरे राज्य/देश में चला जाए)। जहां उसे कर व राहत पैकेज प्रणाली हमसे बेहतर मिल जाए। ये है कहानी हमारे देश के कर प्रणाली, बजट व राहत पैकेज की...मुफ्त राशन, मुफ्त शिक्षा, मुफ्त बिजली, पानी मुफ्त, सायकल, मुफ्त लैपटॉप, मुफ्त इलाज, मुफ्त घर...सरकार मुफ्तखोरी की आदत लगा रही हैं जनता को... देश ऐसे नहीं चलते दुनिया में कुछ भी मुफ्त नहीं मिलता किसी न किसी को तो कीमत चुकानी होगी।उद्योगपतियों, पूंजीपतियों व करदाताओं को चाहे जितनी गाली दीजिये पर सच्चाई यही है कि इन्हीं करदाताओं के योगदान से देश चल रहा है। सोचिए, समझिए और व्यवहारिक बने रहिए...

महापौर ट्रॉफी 4th विप्र प्रिमियर लीग रात्रिकालीन क्रिकेट चैंपियन शिप

आजाद चौक ब्राह्मण पारा ने जीता विजेता का खिताब

छत्तीसगढ़ ब्राह्मण समाज के तत्वावधान में विप्र युवा समिति द्वारा हिंद स्पोंटिंग मैदान में चौथा विप्र प्रीमियर लीग रात्रिकालीन क्रिकेट प्रतियोगिता का उद्घाटन आशीष उपाध्याय (विधायक एवं विकास संसदीय सचिव) ने ढोल नगाड़ों की गूंज, आतिशबाजी और युवाओं के जोश और उत्साह के बीच किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एजाज ढेबर (महापौर नगर पालिक निगम) एवं विशिष्ट अतिथि प्रमोद दुबे (सभापति नगर पालिक निगम रायपुर), ज्ञानेश शर्मा (अध्यक्ष छत्तीसगढ़ योग आयोग), आशीष दीवान (अध्यक्ष हिंद स्पोटिंग एसोसिएशन), नरेन्द्र तिवारी अध्यक्ष (विप्र भवन प्रबंध समिति) एवं अनल शुक्ला उपस्थित थे। उद्घाटन अवसर पर अपने उद्बोधन में विकास उपाध्याय ने कहा की हिंद स्पोटिंग मैदान ऐतिहासिक धरोहर है इसे छत्तीसगढ़ का दर्शनीय और खेलकूद के योग्य बनाने का दायित्व हम सब पर है। महापौर एजाज ढेबर ने भी इस बात का समर्थन किया और हिंद स्पोटिंग मैदान के विकास में अपना योगदान देने का वादा किया। इसके पूर्व अतिथियों का स्वागत करते हुए ज्ञानेश शर्मा ने कहा कि छत्तीसगढ़ में ऐतिहासिक फुटबॉल प्रतियोगिता हिन्द स्पोर्टिंग मैदान पर आयोजित होता था। इसकी निरंतरता हेतु सभी ने प्रतिबद्धता व्यक्त की आगे भी सतत इसी प्रकार खेलकूद के माध्यम से इस मैदान का विकास सभी जनप्रतिनिधियों का दायित्व है। इस अवसर पर हिंद स्पोटिंगं एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष संतोष दुबे, सुंदरनगर के पार्षद मृत्युंजय दुबे, आकाश दुबे, अविनाश शुक्ला, के. के शुक्ला, श्याम दुबे, डॉ. ध्रुव पांडेय, उमाकांत तिवारी, संजय दीवान, प्रांजल शर्मा, डॉ. मेघेश तिवारी, व्यासनारायण शुक्ला, अशोक दीवान, प्रकाश तिवारी, विप्र युवा समिति के अध्यक्ष सौरभ शर्मा, सुयश शर्मा एवं सौमित्र सहित छत्तीसगढ़ी ब्राह्मण समाज के सदस्य उपस्थित थे। प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ के युवा ब्राह्मणों की 16 टीमें हिस्सा ली। जिसमें दुर्ग, भिलाई, राजनांदगांव एवं कसडोल की टीम भी थी। उद्घाटन समारोह के अवसर पर 16 टीम उपस्थित रही एवं अतिथियों ने परिचय प्राप्त कर सभी खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। तत्काल ड्रा द्वारा उद्घाटन मैच एवं अन्य मैच का शेड्यूल तय किया गया।

इसके बाद उद्घाटन मैच टीम चाणक्य एवं गजानन इलेवन की बीच खेला गया, जिसमें टीम चाणक्य ने पहली बैटिंग करते हुए 139 रन 2 विकेट के नुकसान पर बनाएं। जिसमें प्रतियोगिता का प्रथम शतक आरती शर्मा में लगाया, 39 गेंद में शानदार 109 रन 5 चौके और 14 छक्के की बारिश हुई।इसके बाद सुजल दुबे 22 गेंद में 55 रन 2 चौका 7 छक्के एवं हेमंत मिश्रा 18 गेंद में 38 रन एक चौका लगाया। रोमांचक लीग मैचों के आधार पर महाकाल इलेवन, क्रिकेट स्टार आजाद चौक व बाहुबली इलेवन ने सेमीफाइनल में प्रवेश किया। छत्तीसगढ़ी ब्राह्मण समाज के तत्वावधान में छत्तीसगढ़ी विप्र युवा संगठन द्वारा आयोजित ऐतिहासिक हिंद स्पोर्टिंग मैदान में महापौर ट्रॉफी 4 विप्र प्रीमियर लीग रात्रिकालीन क्रिकेट चैंपियनशिप के फाइनल मैच में आजाद चौक ब्राम्हण पारा ने महाकाल इलेवन को 26 रन से पराजित कर विजेता बनने का गौरव हासिल किया।

रोमांचक फाइनल मैच में आजाद चौक ने पहले बैटिंग करते हुए 4 विकेट के नुकसान पर 133 रन बनाए। विजेता टीम को पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि एजाज ढेबर (महापौर नगर पालिक निगम रायपुर) ने महापौर ट्रॉफी और 55555 रूपए का पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। उपविजेता महाकाल 11 को प्रमोद दुबे ने (सभापति नगर पालिक निगम रायपुर) 33333 रूपए पुरस्कार प्रदान कर प्रोत्साहित किया। तीसरे स्थान पर रही क्रिकेट स्टार टीम को अनूपचंद त्रिलोकचंद ज्वेलर्स के सौजन्य से 11,111 रूपए का पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर एजाज ढेबर ने कहा कि ऐतिहासिक हिंद स्पोर्टिंग मैदान का अपना एक इतिहास है।

विप्र प्रीमियर लीग के शानदार आयोजन, खिलाड़ियों का उत्साह और दर्शकों के शोर ने खेल के प्रति जुनून का जो माहौल बनाया है उसे बनाकर रखेंगे।इस प्रतियोगिता के बाद जब कल से बच्चे यहां खेलेंगे, तो मुझे ज्यादा खुशी होगी। ब्राम्हण पारा और आसपास के नागरिक बधाई के पात्र है कि इस मैदान को बचा कर रखा है। यहां बच्चे खेलते रहे, इसके लिए इस मैदान को और अधिक बेहतर बनाया जाएगा। अगले वर्ष तक यहां नया ग्राउंड तैयार हो जाएगा और अगला प्रीमियर लीग नए ग्राउंड पर आयोजित किया जाएगा। प्रमोद दुबे ने इस अवसर पर कहा कि महापौर खुद फुटबॉल के नेशनल प्लेयर रहे हैं। इसलिए खेल और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने में भी पीछे नहीं हटे। इसके पूर्व अतिथियों का स्वागत करते हुए ज्ञानेश शर्मा (अध्यक्ष छत्तीसगढ़ योग आयोग) ने कहा कि ऐतिहासिक हिंद स्पोर्टिंग मैदान का 100 वर्ष से भी पुराना इतिहास है। यहां के ऐतिहासिक फुटबॉल प्रतियोगिता आज भी यहां के नागरिकों को याद है। इसे फिर से खेल के योग्य बनाने के लिए महापौर एजाज ढेबर के योगदान से ही विप्र प्रिमियर लीग का आयोजन यहां संभव हुआ। और इस प्रतियोगिता को महापौर ट्रॉफी का नाम देकर प्रतिवर्ष नगर निगम के सहयोग से आयोजन करने का संकल्प के लिए हम सब महापौर के आभारी है। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ ब्राह्मण समाज के पीएससी में चयनित युवा जिलाधीश आकाश तिवारी, तहसीलदार सुमित्र मिश्रा और सहायक जेल अधीक्षक सुनील त्रिपाठी का भी सम्मान किया गया। अंतिम दो ओवर में जीत के लिए 34 रन की आवश्यकता थी। दीपेन्द्र तिवारी ने नौवें ओवर में 2 रन देकर एक विकेट लिया और उसकी शानदार गेंदबाजी के कारण महाकाल जीत से दूर हो गई और 26 रन से फाइनल मुकाबला जीतकर आजाद चौक ब्राह्मण पारा ने महापौर ट्रॉफी पर कब्जा किया। फाइनल मैच में बेहतरीन बल्लेबाजी के कारण ऋषि शर्मा को मैन ऑफ द मैच प्रदान किया गया। प्रतियोगिता में 212 रन और 5 विकेट लेकर ऑल राउंडर प्रदर्शन के कारण दीपेन्द्र तिवारी को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया। सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज रजत तिवारी, सर्वश्रेष्ठ गेंद बाज राकेश शर्मा एवं सर्वश्रेष्ठ फील्डर पार्थ दीवान को भी पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर अमित अग्रवाल (संचालक दोपहिया डॉट कॉम), नरेन्द्र तिवारी, अशोक दीवान, अविनाश शुक्ला, अनिल तिवारी, भूपेंद्र शर्मा, डॉ. ध्रुव पांडये, आनंद पांडेय, संजय दीवान, अमजद भाई सहित छत्तीसगढ़ विप्र युवा संगठन के अध्यक्ष सौरभ शर्मा अन्य सदस्य सौमित्र मिश्रा, सुयश शर्मा, अभिषेक मिश्रा, मुदित पांडेय, अर्पित अमित दीवान सहित छत्तीसगढ़ ब्राम्हण समाज के अनेक सदस्य और आसपास के खेल प्रेमी उपस्थित थे।

राज्य स्तरीय ओपन शतरंज स्पर्धा का आयोजन

मितान एवं ग्रीन आर्मी द्वारा आयोजित आशीष शर्मा स्मृति राज्य स्तरीय ओपन शतरंज स्पर्धा का शुभारंभ आनन्द समाज वायनालय ब्राम्हणपारा में मुख्य अतिथि अविनाश शुक्ला (भूतपूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग), विशेष अतिथि आशुतोष शर्मा (अध्यक्ष मितान) एवं अमिताभ दुबे (संस्थापक ग्रीन आर्मी) की उपस्थिति में संपन्न हुआ। प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ के सभी हिस्से से कुल 112 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे है।6000 रू. की नगद इनामी राशि एवं 30 से अधिक ट्रॉफी सहित करीब 100 से अधिक पुरस्कार वाली प्रदेश की इस सबसे बड़ी शतरंज प्रतियोगिता का समापन एवं पुरस्कार वितरण 5 अप्रैल को शाम 6 बजे आदरणीय ज्ञानेश शर्मा (अध्यक्ष छ.ग. योग आयोग) के मुख्य आतिथ्य एवं आदरणीय प्रमोद दुबे (सभापति रायपुर नगर निगम) की अध्यक्षता एवं आरणीय गिरीश दुबे (अध्यक्ष रायपुर शहर कांग्रेस) के विशेष आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

आशीष शर्मा स्मृति राज्य स्तरीय ओपन शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन 31 मार्च से 4 अप्रैल तक आनन्द समाज वाचनालय ब्राह्मण पारा में हुआ।

छत्तीसगढ़ की यह सबसे बड़ी इनामी राशि की प्रतियोगिता है इसमें 61000 रूपए नगद इनाम तथा 21 कैटेगरी प्राइज जिसमें अंडर 8, अंडर 10, अंडर 14 ओपन एवं बालिका वर्ग शामिल है। इसके अतिरिक्त कुल 56 ट्रॉफी एवं 75 मेडल्स तथा सर्टिफिकेट इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को प्रदान किये गए। इस वर्ष इस प्रतियोगिता में अब तक के सबसे अधिक 113 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम उद्घाटन 31 मार्च को संस्कृत कॉलेज के भूतपूर्व अध्यक्ष अविनाश शुक्ला ने किया उन्होनें पहली चाल घोड़े की चली और कहा कि शतरंज में एक ही ऐसा मोहरा है जो अपने आसपास के 8 खानों को नियंत्रण में रखता है। अन्य सभी मोहरे की चाल समझ में आती है लेकिन घोड़े की अढ़ईया किसी को समझ नही आती। प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण 5 अप्रैल को प्रदेश योग आयोग के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा के मुख्य आतिथ्य और रायपुर नगर निगम के सभापति प्रमोद दुबे की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

ज्ञानेश शर्मा ने खिलाड़ियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिस प्रकार योग के द्वारा स्वस्थ शरीर का निर्माण होता हैं उसी प्रकार स्वस्थ मस्तिष्क के लिए शतरंज का खेल बहुत ही आवश्यक है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रमोद दुबे ने कहा कि आप लोग प्रतियोगिताओं में शतरंज का खेल खेलते है लेकिन हम लोग राजनीतिक क्षेत्र में है। और रोज -विरोधियों की बहुत से टेढ़ी-मेढ़ी छुपी हुई चालों का सामना करते हुए अपने आपको शह और मात से बचाकर आगे बढ़ रहे है। इस प्रतियोगिता में प्रदेश से आये 113 खिलाड़ियों में से 24 महिला प्रतिभागियों, 15 अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों एवं 23 राष्ट्रीय खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया।

इसमें राजनांदगांव, दुर्ग, कांकेर, भिलाई, बलौदाबाजार, बस्तर, महासमुंद सहित सुदूर जिलों से आये प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस टूर्नामेंट के संचालक रायपुर जिला शतरंज संघ के सचिव नवीन शुक्ला थे एवं मुख्य निर्णायक अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी, प्रशिक्षक एवं माफिडे आर्बिटर रोहित यादव थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम में जिला शतरंज संघ के अध्यक्ष आशुतोष शर्मा, ग्रीन आर्मी के संस्थापक अमिताभ दुबे के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में संजय परमार, राघव शुक्ला, विवेक शर्मा, अजय पांडेय, गौरव दीवान, प्रवीण टिकरिहा, सन्दीप दीवान, सुजीत तिवारी, सुयश शर्मा, आनंद अवधिया, समेत ग्रीन आर्मी एवं मितान के सभी सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

सोहागा मंदिर धर्मशाला निर्माण का भूमिपूजन

युवा उद्यमी एवं वास्तु शिल्पी चेतन शर्मा कृत रचना

18 फरवरी शुक्रवार को प्रातः 11 बजे सोहागा मंदिर श्री राधाकृष्ण स्वामी मुरली मनोहर मंदिर ब्राह्मण पारा, रायपुर में धर्मशाला निर्माण कार्य का भूमि पूजन कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह जानकारी देते हुए मंदिर ट्रस्ट कमेटी सोहागा मंदिर के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा ने बताया कि धर्मशाला निर्माण कार्य का भूमि पूजन कार्यक्रम ब्रम्हचारी डॉ. इंदुभवानंद महाराज प्रमुख आचार्य श्री शंकराचार्य आश्रम बोरिया कला, रायपुर के करकमलों से संपन्न हुआ। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ी ब्राम्हण समाज के भक्तजन बड़ी संख्या में उपस्थित थे। **यहां पर सभी विप्र बंधुओं से आव्हान है कि इस अधोसंरचना के निर्माण में अपना उत्तरोत्तर सहयोग देकर इसे पूर्णता प्रदान करें**

छत्तीसगढ़ योग आयोग के अध्यक्ष श्री ज्ञानेश शर्मा जी का अखंड ब्राह्मण समाज द्वारा सम्मान

कान्यकुब्ज सभा व शिक्षा मंडल आशीर्वाद भवन में श्री ज्ञानेश शर्मा जी को छ.ग. शासन द्वारा योग आयोग का अध्यक्ष शासन द्वारा योग आयोग का अध्यक्ष मनोनयन किए जाने पर अभिनंदन पत्र व शाल श्रीफल से अभिनंदित व सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री अरूण शुक्ल, हेमंत तिवारी, रज्जन अग्निहोत्री, शशिकांत मिश्र, राजकिशोर दीक्षित, राघवेंद्र मिश्र उपस्थित थे।

महाशिवरात्रि पर संकल्प लें, अपने वेद और सांस्कृतिक परंपरा की ओर लौटने की– स्वामी इंदुभवानंद महाराज

विप्र युवा समिति द्वारा महारुद्राभिषेक में विश्व शांति की प्रार्थना

1 मार्च ओम नमः शिवायः महादेव शिव की असीम अनुकंपा से विप्र भवन प्रांगण में महारूद्राभिषेक का आयोजन परम पूज्यनीय इंदु भवानंद महाराज (प्रमुख शंकराचार्य आश्रम बोरियाकला) एवं धर्मेन्द्र महाराज के सानिध्य में विधि विधान से संपन्न हुआ। महाशिवरात्रि के अवसर पर रूद्राभिषेक के उपरांत विश्व शांति की प्रार्थना की गई। इस अवसर पर युवाओं को संबोधित करते हुए स्वामी इंदु भवानंद महाराज ने कहा कि विप्र समाज के युवाओं को वेद, सांस्कृतिक परंपरा एवं अध्ययन की और लौटना चाहिए। क्योंकि अपने पुरातन एवं सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने का सर्वाधिक दायित्व विप्र समाज के युवाओं का है। अगर हमारे राष्ट्र में वेद और संस्कृति की क्षति होती है। तो इसका सबसे बड़ा उत्तर दायित्व ब्राम्हण समाज का होगा। अतः हमें अपने दायित्व को समझते हुए अपनी परंपरा की और लौटना चाहिए। राष्ट्र और समाज के निर्माण में अपने दायित्व को पूरा करना युवाओं का कर्तव्य है। शिव शक्ति का स्त्रोत है और सही कार्य में अपनी ऊर्जा लगाने से शक्ति का पतन नहीं होता। इस अवसर पर विप्र समाज के युवा पारंपरिक वेश भूषा में उपस्थित थे। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ि योग आयोग के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा, विप्र सांस्कृतिक भवन के अध्यक्ष नरेंद्र तिवारी, अशोक दीवान, आनंद पांडेय, संजय दीवान सहित छत्तीसगढ़ी ब्राम्हण समाज के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे। इस अवसर पर विप्र युवा संगठन के अध्यक्ष सौरव शर्मा के नेतृत्व में मयंक तिवारी, प्रदीप तिवारी, परिवेश मिश्रा एवं सुय [illegible] से हिस्सा लिया।

खोया - खोया सा दान का धर्म...

मां मैं निःशब्द हूँ

- शजिन्ता

माँ ने मेरा हाथ खूब जोर से पकड़ा और कहा, देख लेना!! यही थे माँ के अन्तिम शब्द । क्या इन शब्दों का अर्थ विश्वास जताना था, या कुछ और... माँ क स्वर्गवास हुए अभी कुछ ही दिन हुए हैं लेकिन लगता नहीं कि अब माँ नहीं है। मैं तो ससुराल में हूँ बेटी जो हूँ। वैसे तो मैं भी अब माँ हूँ, लेकिन इसकी अनुभूति अब हो रही है. ममत्व का अहसास हाथ हटने के बाद ही होता है। कहते है ना किसी के होने का अहसास उसके चले जाने के बाद होता है, सच है। मां है तो मायका भी है उसके जाने के बाद शायद ही वैसा हो, एक विश्वास की कमी... मेरे पिता की मृत्यु से क्षति का अहसास हुआ, बहुत बड़ी कमी भी रही. जिसे माँ ने सम्हाल रखा था, माँ के रहते उन्होनें पिता की कमी को अपने दोहरे किरदार से संजो रखा था, लेकिन अब तो माता-पिता दोनो ही नहीं है।

मेरे चार भैया-भाभी है, तीन मुझसे बड़े हैं। चारों ही मेरे लिए समकक्ष भी हैं और सक्षम भी चारो ने मुझे फूल की तरह रखा है और खुशबू की तरह समझा भी। हाँ, यह भी कि मैं पत्नी और माँ भी हूँ। ये सभी प्यार, भरपूर प्यार के ही रिश्ते है। माँ के उपचार के चलते मैने इन रिश्तों की सूक्ष्मता को महसूस किया। मातृत्व की परिभाषा अंतर्मन से पहचानी भी।

माता पिता की भूमिका वैसे तो जानी पहचानी सी है, ससुराल जाने के बाद भी उनकी मृत्यु उपरांत जो बड़ा सा शून्य बनता है उसे भाई भाभी हटा कर लगाव की निरंतरता दे पाएँगे ? यह एक बड़ा सा प्रश्न दबी आवाज मे पहले भी होता था, और अब वह सामने दिखाई देता है। वही पुरानी बचपन की अठखेलियाँ, नटखट उत्पात, आगंतुकों के वार्तालाप, कुछ प्रश्न, कुछ अनमने और कुछ रोचक उत्तर मन ही मन लगातार आते रहते है। लेकिन, माँ के द्वारा उनकी मृत्यु पूर्व आत्म विश्वास को बढ़ाने वाली पकड़ अभी भी मन को झकझोर देती है। माँ ने मुझे मेरे ब्याह के बाद से लगातार प्यार बढ़ाने की राह दी, जो जीवन के प्रति और सभी संबंधों के प्रति जिम्मेदारी की सीख दी, मेरा जीवन उनके आशीर्वचन से उपकृत हो गया। उनके ईश्वरीय दृष्टिकोण को क्या लिखूँ, अप्रतिम भक्ति-भाव, आसक्ति मेरे लिए तो समझना भी मानो पूजा ही है। सामाजिक ढांचा और उससे हमारा सरोकार, नैतिकता, सामंजस्य को नारीत्व के भाव से जोड़ना अतुलनीय रहा है। उनका मंदिरों में जाना वहां की सुविधा-असुविधा समझना और यथा संभव सहयोग, वाह.... पुनः निःशब्द...

माँ, हमने तुम्हें शायद पूरा जाना ही नहीं, समझा ही नहीं, एक बार और मौका देना माँ इसी रूप में । शत् शत् नमन... मैं पूरा लिख नहीं पाई एक बार फिर से कलम पकड़ना सिखाना माँ, प्रणाम माँ।

मेरी मासी पुष्पलता शर्मा की लता में एक लता मै कनकलता हूँ। जब मैने होश संभाला, मै माँ का प्यार मौसी से पाई हूँ। उनसे भजन, भगवत कथा, दुनिया की रीति रिवाज, परिवार में सामंजस्य बनाकर रहना, परायों को अपने मधुर स्वभाव से अपना बनाना। फिर दुःख में धैर्य नहीं खो कर मुस्कुराना ये सब सिखाया है। आज वे इस दुनिया में नही है, परन्तु उन्हें अपनी धड़कन में हमेशा महसूस किया है मैनें। उनकी कमी मेरे जीवन में हमेशा रहेगी। आज मैं अपनी मासी के दिखाये मार्ग दर्शन से सुखमय जिंदगी जी रही हूँ।

उन्हे मेरी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि। माँ... सी प्रणाम .... शत् - शत् नमन।। कनकलता शर्मा, बेमेतरा

पुत्रवत् की कलम से... माँ स्वयमेव ही ब्रह्माण्ड या वैश्विक अनुभूति का बोध है। मेरे लिए माँ जी सम्बोधन वो दो शब्द है जो आज स्मृति मात्र है। वैसे तो ये मेरे पिता का ननिहाल था, लेकिन मैने यहां माँ जी के सानिध्य में अपने ननिहाल का प्यार भी पाया है। अप्रतिम, अप्रत्याशित मानसिक एवं अन्य सहयोग से मेरी व्यैक्तिक प्रगति, उत्थान में आप का आशीर्वाद मुझे हमेशा प्राप्त होता रहा। मैं उन भाग्यशाली लोगो में हूँ, जिन्हे माँ जी भी आपका प्यार, आशीर्वाद, डांट के साथ अतुलनीय शिक्षा प्राप्त हुई। इस मातृत्व व कृपा के लिए भगवान को धन्यवाद हेतु मैं खुद को बहुत छोटा पाता हूँ। माँ जी, मैं अपने जीवन के प्रत्येक पलों में आपके प्यार दुलार आशीर्वाद को अपने व्यवहार में ला कर उस खालीपन को भरने की कोशिश इस जीवन में सदैव करता रहूँगा। आपके आशीष छत्र से संरक्षित सूत्र, शिरीष चौबे, अप्पू (दुर्ग छ.ग.)।

माँ सी मेरी... दीदी बाई : आपकी स्मृति जो शेष है, वो हम पर विनय विशेष है। आपका विनीत व्यवहार, विवेक, ईश्वर का ही संदेश हमने मिलनकर प्रभु कुटीर का, बीज जो गहरा बोया है। एक वृक्ष पुष्पलता संग खड़ा वहां, बस आपकी यादों में खोया है। सिर्फ एक अनुरोध पर मंदिर के पट निर्माण की राशि, खूबसूरत रजत थाल में कान्हा के रंगीन वस्त्र दिया दान आज भी पुनर्स्मृत हो जाते है... शत्-शत् नमन बाई दीदी : सुश्री उषा श्रीवास्तव शिवालय हनुमान मंदिर राजनांदगांव. माँ...सी मौसी रही पर्याय है माँ का जिस प्रकार जन्मदात्री माँ के लिए लिखना असम्भव है, उसी प्रकार पालन करने वाली माँ के लिए असम्भव है।

ऐसा व्यक्तित्व जो सारे समाज के बारे में इतना ज्यादा सोचे... अब नहीं मिलते। एक भी कार्य दिखावे वाला नहीं शान्ति पूर्वक गुपचुप तरीकों से परहित ही परहित। हाँ, परहित। किस तरह से परहित, मेरी जानकारी में राजनांदगांव से चलकर रायपुर होते हुए, बेमेतरा और कवर्धा तक गुमनाम परहित। क्या परिवार, क्या समाज क्या मन्दिर और क्या, राम मन्दिर भी !! कुछ भी नहीं छूटा, सभी को प्यार, दुलार, सिर्फ परहित ही परहित। ईश्वर मेरी माँ सी को अपने श्री चरणों में स्थान दे तथा मुझे हर जन्म में यही माँ... सी मिले।

सभी मां और बेटियों को समर्पित ...

मेरी बेटी बड़ी हो गई, साथ मेरे खड़ी हो गई। डांट देती मुझे ऐसे, मेरी वो सहेली हो गई।
बीपी शुगर क्यों बढ़ाई आपने, पहन लेती हो कुछ तो भी कपड़े बेतुके, मै दिलाऊं तुम्हें कुछ ढंक के।
हो जाती है नाराज मुझसे, मैं फिर करती हूं बात उससे।
कुर्ती पहन रखी इतनी बड़ी, जी लो खुद के लिए दो घड़ी।
सफेद बाल क्यों रख रखे ? मेंहदी लगाने से क्यों डर रहे ?
सहज योग, मेडिटेशन क्यों नहीं रखते ? अपने आप को पॉजिटिव क्यों नहीं रखते ?
मॉर्निंग वाक पर जाओ, अपना मन ध्यान योग पर लगाओ।
निगेटिव विचार मन से हटा दो, अपना मन भक्ति में लगा दो,
मेरी हर कमी पूरी हो गई, मेरी बेटी बड़ी हो गई।
दुनियां से लड़ेगी मेरे लिए, मेरे कंधे से ऊंची हो गई, मेरी बिटिया मुझसे समझदार हो गई।।

- अविनाश शुक्ल

समाज में वरिष्ठजनों की भूमिका

वरिष्ठजनों की भूमिका समाज हित या परिवार हित में काफी अहं होती है, इसलिए तो कल्प वृक्ष की उपाधि मिलती है। तालाब की शोभा तब है जब उसमें कीचड़ न हो साथ ही कमल के पुष्प भी हो, सभा की शोभा तभी है जब उसमें कठिन-कठोर शब्द न हो साथ ही श्रेष्ठ व कोमल कल्पना अवश्य हो, मन की शोभा तभी है जब उसमें विषय-वासना न हो, साथ ही शुभ व कल्याणकारी विचार अवश्य हो, तभी कल्प वृक्ष से सर्द हवाएं मिलती रहेगी।

हम अपने अन्दर जन्म जन्मांतरो के संस्कार संजोए रहते है, इनमें शुभ अशुभ दोनों प्रकार के संस्कार होते हैं, क्योंकि हम अपने पिछले जन्मों में अच्छे व बुरे दोनों ही प्रकार के अनेकानेक कर्म कर चुके हैं, जिनके संस्कार हमारे सूक्ष्म शरीर में तब तक अंकित और संजीव रहते है जब तक उनका फल हम भोग नहीं लेते ये संस्कार सुप्त अवस्था में रहते है। और हम जब-जब जैसी-जैसी शिक्षा ग्रहण करते है, जैसी संगति व परिस्थिति में होते हैं वैसे ही संस्कार जागृत होते हैं। वाणी में मधुरता अपनों के प्रति निश्चल व्यवहार, माता-पिता के प्रति सेवा भाव, आचरण में पवित्रता, कर्म, परोपकार, ईश्वर के प्रति अनन्य भाव, अच्छे गुण हमारे जीवन को सफल व श्रेष्ठ बनाते हैं। वरिष्ठ जन, समाज में परिवार की वो कड़ी हैं जो कम से कम दो पीढ़ियों तक अपना सामंजस्य बनाकर उदाहरण, प्रेरणा बनकर रह सकते है। हम अपने घर के सदस्यों के साथ समानता का जीवन व्यतीत करते तो सुख व निकटता प्राप्त होगी, और अपने दुर्गुणों से मुक्ति मिल सकेगी, वरिष्ठ जन चाहे गुरू हो, मुखिया चाहे परिवार का हो या अपने आस-पास की कोई भी कड़ी हो मै तो कहना चाहूंगी...

खिलता है जीवन में, फूल भी ऐसा कोई-कोई लेता है जन्म अपना, बन प्रेरणा कोई - कोई

वर्तमान में किसी को किसी के लिए समय ही नहीं है, ऐसे में प्रेरणा स्त्रोत कोई मिल जाए तो हमारा भाग्य ही समझे। जिस तरह मकान में कॉलम के बिना घर निर्माण नहीं हो सकता, इसी तरह वरिष्ठ जन के बिना घर भी पूरा नहीं कहलाता। हमारे देश के युवा शक्ति में समय को अपने अनुसार बदलने की क्षमता है युवा वर्ग देश को नई दिशा देकर उन्नत राष्ट्र बना सकते है और बना भी रहे हैं, आज युवाओं की संख्या भी अधिक है। उन्होनें भारत को बदलने में भी कामयाबी पाई है पर ये सभी को याद रखना होगा कि आज का युवा भी भविष्य का वरिष्ठजन है, उत्तावलेपन और अपनी क्षमता का प्रयोग जरा सोच समझकर करें तथा वरिष्ठजनों का यथा सम्मान करें।समाज हो या घर वरिष्ठजन की भूमिका सदैव सशक्त रही है। वर्तमान भौतिकवादी युग से इस भूमिका को कमजोर करने का प्रयास जरूर किया है लेकिन हर भारतवासी के रग-रग में बसे इस गुण को समाप्त नहीं कर पायेगी। युवा अवस्था में सभी आजादी पसंद होते है जिस तरह बाल्या अवस्था में माँ-बाप बच्चों को ऊँगली पकड़कर चलना सिखाते है, रास्ता दिखाते है, भविष्य बनाते है वैसे ही मार्गदर्शक की आवश्यकता बच्चों को युवाकाल में भी होती है घर के बुजुर्ग परिवार पर आने वाली समस्याओं का उचित समाधान बताते हैं।

जीवन का सच्चा रास्ता दिखाते है किसी समाज, राज्य या किसी देश को वरिष्ठजन उस समाज, राज्य, देश रूपी शरीर में आंखों का काम करते हैं, वृद्धजन सही रास्ता दिखाते हैं, कुछ युवा आंखो में पट्टी बांध लेते हैं, और रास्ता भटक जाते हैं, उन्हें सही रास्ता वरिष्ठजन रूपी आंखे ही दिखाती हैं। समाज में वरिष्ठ जनों की भूमिका न तो कम हो सकती है और न समाप्त। वैसे प्रत्येक युवा का कर्तव्य है कि वरिष्ठजनों की भूमिका को नजर-अंदाज न करें। इसी तरह वरिष्ठजनों को चाहिये कि आज के परिवर्तन शील समाज में होने वाले परिवर्तनों को भी आत्मसात कर एक प्रगतिशील तथा उन्नत समाज के निर्माण में अपना योगदान अवश्य दे।

- कुसुम शर्मा

कोरोना के साथ जीना सीखना होगा - डॉ. आलोक कुमार चक्रवाल

विप्र कॉलेज में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबीनार

27 जनवरी - छत्तीसगढ़ युवा विकास संगठन संचालित विप्र महाविद्यालय में वाणिज्य संकाय द्वारा आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबीनार के प्रथम दिवस उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. आलोक कुमार चक्रवाल (कुलपति गुरू घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर) समारोह के अध्यक्ष डॉ. गिरीशकांत पांडेय (कुल सचिव पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर) एवं विशिष्ट अतिथि ज्ञानेश शर्मा (अध्यक्ष योग आयोग छत्तीसगढ़) की गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ। वेबीनार का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि एवं कीनोट स्पीकर डॉ. आलोक कुमार चक्रवाल ने महामारी से पर्यटन उद्योग पर पड़ने वाले प्रभाव का विस्तार पूर्वक तार्किक वर्णन करते हुए बताया कि मार्च 2020 को हम कोरोना वायरस के प्रति जागरूक हुए। चीन के वुहान लैब से पूरे विश्व में फैले इस कोरोना वायरस ने विश्व की अर्थव्यवस्था को हिलाकर रख दिया। इससे पर्यटन उद्योग भी प्रभावित हुआ। पर्यटन उद्योग के साथ जुड़े उद्योग होटल, यातायात भी प्रभावित हुआ और पर्यटन से जुड़े लोग बेरोजगार हुए। वर्तमान में कोरोना के कारण पर्यटन उद्योग को जितना नुकसान होना था, हो चुका है। अब इससे उबरने का समय है। तीसरी लहर उतना खतरनाक नहीं है अतः तीसरी लहर में सावधानी के साथ रहते हुए, पर्यटन उद्योग को हुये नुकसान की भरपाई की जा सकती है। हमें कोरोना के साथ जीना सीखना होगा। कोरोना में जितने लोग मरे, उससे ज्यादा भारत में रोड सड़क दुर्घटना में मरते है। इसलिए सावधानी रखते हुए पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने से होटल और यातायात को भी इसका फायदा मिलेगा। इसके पूर्व अतिथियों का स्वागत करते हुए प्राचार्य डॉ. मेघेश तिवारी ने बताया वैश्विक अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग का प्रमुख हिस्सा है। हमारे देश का लगभग 10 प्रतिशत जीडीपी पर्यटन एवं उससे जुड़े अन्य उद्योगों से प्राप्त होता है। अतः महामारी से पर्यटन उद्योग और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव पर शोध वर्तमान समय की आवश्यकता है। जिससे इसके बुरे प्रभावों को दूर किया जा सके और पर्यटन उद्योग को पुनः विकसित किया जा सके। इसके बाद डॉ. उषा दुबे (पूर्व विभागाध्यक्ष अर्थ शास्त्र विभाग पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर) ने अपने उद्बोधन में कहा कि कोविड-19 महामारी ने विगत 3 वर्ष से पूरे विश्व में आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित किया है।इसका सब से बुरा प्रभाव पर्यटन उद्योग पर पड़ा है और इसके साथ जुड़े उद्योग जैसे होटल, यातायात सभी बुरी तरह प्रभावित हुआ है। विषय विशेषज्ञ द्वारा इस पर चर्चा से कुछ नए समाधान सामने आएंगे जो वर्तमान समय के लिए उपयोगी होगा। इसके पूर्व संयोजक डॉ. आराधना शुक्ला ने वेबीनार के संबंध में विस्तार पूर्वक जानकारी देते हुए तीनों दिवस वेबीनार में जुड़ने वाले विषय विशेषज्ञों का परिचय दिया। दूसरे तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता प्रोफेसर रविंद्र रैना (प्राध्यापक अर्थ शास्त्र बिजनेस स्कूल डरबन तकनीकी विश्व विद्यालय साउथ अफ्रीका) ने महामारी का इतिहास बताते हुए बताया कि कोरोना महामारी से ज्यादा घातक प्लेग महामारी एवं स्पेनिश

फ्लूथा। प्लेगमहामारी से विश्व की 40 से 45 प्रतिशत जनसंख्या खत्म हो गई। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1919 में फैले स्पेनिश फ्लू से पूरा विश्व प्रभावित हुआ। इसमें मृत्युदर लगभग 10 प्रतिशत था। वर्तमान में कोरोना वायरस में मृत्युदर 1 प्रतिशत के आसपास है। अतः इसे महामारी कहना उचित नहीं होगा। विश्व की राजनीति एवं फार्मा कंपनी और मीडिया ने इसे महामारी के रूप में प्रस्तुत किया है। कोविड - 19 से ज्यादा इसके भय से मरने वालों की संख्या ज्यादा है। संतुलित जीवनशैली एवं प्रतिरोधक क्षमता से महामारी प्रभावित नहीं कर पाई।

28 जनवरी - दूसरे दिवस वेबीनार में चेयर पर्सन प्रोफेसर राकेश ढांड (पूर्व प्राध्यापक वाणिज्य विभाग एवं छात्र अधिष्ठाता विक्रम विश्व विद्यालय उज्जैन मध्यप्रदेश) ने कहा कि पर्यटन उद्योगों के विस्तार विकास में सहायक है। पर्यटन में सिर्फ आवागमन यात्रा बस नही है, पर्यटन आज बहुआयामी हो गया है। देश की अर्थव्यवस्था में इसका प्रमुख स्थान है। 2015 के बाद पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से वृद्धि हुआ। इसे अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण कारक माना जाने लगा। परंतु महामारी के बाद परिस्थितियां अनुकूल नहीं रही। महामारी से 70 75 प्रतिशत पर्यटकों की संख्या में कमी हुई। साथ ही पर्यटन से जुड़े और उद्योग भी संकट की अवस्था में पहुंच गए। पर्यटन से जुड़े लोग बेरोजगार हो गए। वर्तमान समय में महामारी में कमी और शासन की नीतियों के साथ पर्यटन अर्थव्यवस्था के विकास में फिर से अग्रसर होगा।

कीनोट स्पीकर डॉ. विपिन शर्मा (फैकेल्टी एंड डायरेक्टर प्लैनिंग एंड डेवलपमेंट यूनिट इंग्लिश लैंग्वेज इंस्टीट्यूट जजान यूनिवर्सिटी सऊडी अरेबिया) ने आंकड़ो के विश्लेषण के माध्यम से बताया कि महामारी के कारण पर्यटन एवं उससे जुड़े उद्योग जैसे होटल, रेस्टोरेंट, ट्रैवल के साथ निवेशकों को भी नुकसान हुआ। वर्तमान में शासन का दायित्व है कि पर्यटन के अनुकूल नीतियां बनाकर पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहित करना चाहिए। क्योंकि किसी भी प्रकार के प्राकृतिक या मानवीय आपदा का सर्वप्रथम प्रभाव पर्यटन पर पड़ता है। एवं इससे जुड़े उद्योग भी प्रभावित होते है। अतः वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रमुख स्थान रखने वाले पर्यटन उद्योग के प्रति एक अच्छी नीति और योजना की आवश्यकता है। जो इस प्रकार के आपदा के चुनौती को अवसर में बदल सकें। दूसरे तकनीकी सत्र के गेस्ट ऑफ ऑनर डॉ. अशोक शर्मा (सहायक प्राध्यापक वाणिज्य विभाग शासकीय छत्तीसगढ़ महाविद्यालय रायपुर) ने कोरोना महामारी का अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव का विस्तार पूर्वक व्याख्या देते हुए बताया कि पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए उत्पादन, रोजगार के असवर में भी वृद्धि होना चाहिए। लोगों की आमदनी बढ़नी चाहिए। अर्थात् अर्थव्यवस्था में तेजी आने पर और अनुकूल आर्थिक वातावरण से पर्यटन एवं इससे जुड़े उद्योग का विकास एवं विस्तार होगा।

29 जनवरी - को समापन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. के.एल. वर्मा (कुल पति पंडित रविशंकर शुक्ल विश्व विद्यालय रायपुर), समारोह के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा (अध्यक्ष योग आयोग छत्तीसगढ़) एवं विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर राकेश ढांड (पूर्व प्राध्यापक वाणिज्य विभाग एवं छात्र अधिष्ठता विक्रम विश्व विद्यालय उज्जैन मध्यप्रदेश) की गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर के.एल. वर्मा ने कहा कि पहले धार्मिक कार्यों के लिए ही पर्यटन होता था, धार्मिक स्थानों पर ही लोगों का आवागमन था। परंतु धीरे-धीरे पर्यटन के क्षेत्र में विस्तार होता गया। साहसिक, जनजीवन को जानने, खेलकूद, चिकित्सा आदि विभिन्न प्रकार से पर्यटन का विस्तार होता गया। 21वीं सदी में पर्यटन अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। परंतु कोरोना महामारी के कारण पर्यटन उद्योग एवं इससे जुड़े उद्योग लगभग संकट में आ गए। इस प्रकार के वेबीनार से पर्यटन उद्योग के विकास और विस्तार पर विषय विशेषज्ञों द्वारा चर्चा से निश्चित तौर पर शासन को महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त होंगे। जिससे पर्यटन उद्योग का विस्तार होगा। इस अवसर पर प्रोफेसर राकेश ढांड ने कहा कि वेबीनार में प्रस्तुत शोधपत्र उपयोगी और महत्वपूर्ण है। जो पर्यटन उद्योग के पुनर्विकास के काम आएंगे। पर्यटन धार्मिक के साथ-साथ आज बहुउपयोगी हो गया है। इसमें अपार संभावनाएं है यह वेबीनार नए अवसर और रास्ते खोजने में मदद करेगा। ज्ञानेश शर्मा ने अपने उद्‌बोधन मे कहा कि कोरोना महामारी के कारण पर्यटन उद्योग सहित समस्त उद्योग पर संकट के बादल मंडराने लगे थे। परंतु तीसरी लहर में खतरा कम होने के कारण संभावना बढ़ गयी है कि हम फिर से समस्त उद्योग धंधे को नए सिरे से पुनः स्थापित कर सकें। इसमें सर्वाधिक प्रभावित पर्यटन उद्योग भी शामिल है।पर्यटन उद्योग राज्य सरकार के राजस्व प्राप्ति का महत्वपूर्ण जरिया है। आज छत्तीसगढ़ पर्यटन के विकास के लिए नए अवसर खोज रही है, और उसके आधार पर अधोसंरचना का विकास कर रहा है। जो लोगों के लिए रोजगार की संभावनाएं उत्पन्न करेगी। विप्र महाविद्यालय का यह वेबीनार इसी क्षेत्र में विषय विशेषज्ञों के विचार विमर्श से नए सुझाव शासन को प्रदान करेगी, जो राज्य
और राष्ट्र में पर्यटन विकास के लिए महत्वपूर्ण होगा। इसके पूर्व प्राचार्य डॉ. मेघेश तिवारी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए तीनों दिवस वेबीनार में विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।
इसके पूर्व तकनीकी सत्र के चेयर पर्सन डॉ. मधुलिका अग्रवाल (डीन वाणिज्य विभाग पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर) ने आंकड़ो के विश्लेषण के आधार पर बताया कि छत्तीसगढ़ में भी पर्यटन उद्योग की अपार संभावनाएं है। कोरोना महामारी से पर्यटन उद्योग को जो क्षति हुई है। उसे शासन की नीतियों जैसे विशेष लोन कर में छूट, तत्काल वीजा की सुविधा आदि उपाय द्वारा पूरा किया जा सकता है। पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं है इसके लिए आज की युवा पीढ़ी को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। गेस्ट ऑफ ऑनर डॉ. सैयद आफताब अहमद (अतिथि सहायक प्राध्यापक अजमान विश्व विद्यालय दुबई) ने बताया कि दुबई पर्यटन का एक ऐसा मॉडल है, जिससे कोई भी देश सीख सकता है। दुबई में आने के लिए आज टिकट नहीं मिल रहा है। यहां के पर्यटन स्थल हाउसफुल है। पर्यटन में रोजगार की अपार संभावनाएं है। केरल छत्तीसगढ़ से छोटा है। परंतु केरल में इंटरनेशनल
एयरपोर्ट है। वहां पर्यटन उद्योग विकसित है। छत्तीसगढ़ केरल मॉडल अपना सकता है। छत्तीसगढ़ मे वन का क्षेत्र केरल से अधिक है, अतः छत्तीसगढ़ में पर्यटन की अपार संभावनाओं का दोहन करने आवश्यकता है। यहां ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाएं है। प्रोफेसर एस. के. मिश्रा (विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र, वाणिज्य, दर्शनशास्त्र विभाग विक्रम विश्व विद्यालय उज्जैन मध्यप्रदेश) ने अपने व्याख्यान में बताया कि भारत में निशुल्क वैक्सीनेशन से पर्यटन उद्योग की संभावनाओं का द्वार खुलता है। किसी भी राष्ट्र में पूर्ण वैक्सीनेशन से आने जाने का मार्ग खुल जायेगा, जो पर्यटन उद्योगो के लिए पहली आवश्यकता है। इसलिए कोरोना महामारी के प्रभाव को कम करने के लिए कोविड-19 के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए घरेलू पर्यटन व विदेशी पर्यटन को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। अंत में आभार प्रदर्शन विभागाध्यक्ष डॉ. विवेक कुमार शर्मा ने किया। वेबीनार का संचालन संयोजक डॉ. आराधना शुक्ला एवं सहसंयोजक निधि श्री ठाकुर ने किया।

एक निवेदन : छत्तीसगढ़ी ब्राम्हण समाज के सदस्यों क्या आप जानते है ? कोई भी समाज कमजोर नही होता!

सिर्फ अपने लिए सोचना, अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए दूसरों का उपयोग करने जैसी संकीर्ण मानसिकता रखना, समाज को कमजोर करने की स्वयंभू भस्मासुर की उत्पत्ति करना है, ये भस्मासुर हर जगह उत्पन्न हो गए हैं। साल में एकबार परशुराम जी की शोभायात्रा निकालकर या उपनयन संस्कार समारोह कर या सामूहिक विवाह समारोह जैसे इसी प्रकार के आयोजन से कुछ नहीं होता। यह सब आयोजन अच्छा नहीं ऐसी बात भी नहीं है। परंतु हमेशा इससे ही संतुष्ट हो जाना उचित नहीं है। समाज के उत्थान व विकास में इस प्रकार के आयोजन की कितनी उपयोगिता है, तथा हमें समाज के विकास के लिए क्या करना चाहिए, इस विषय पर चिंतन करने की अत्याधिक आवश्यकता है।

वर्तमान में हम सब एक साथ बैठकर चिंतन करें, यह असंभव प्रतीत होता है। क्योंकि किसी का राष्ट्रीय संगठन है तो किसी का अंतरराष्ट्रीय अनुभव है, किसी का प्रदेश, किसी का जिला और किसी का गांव स्तर पर संगठन है। बन गए समाज के ठेकेदार, काम कुछ नहीं, बस इन बादशाहों को अपना नाम चलाना है।

खण्ड-खण्ड समाज का कोई अस्तित्व नहीं होता। सब हंसी के पात्र होते हैं। दो किलोमीटर के दायरे में ही हमारे सारे भाई बहन अलग-अलग समाज बनाकर बैठे है। ऐसा नहीं कि एक दूसरों से अलगाव है, सभी एक दूसरे से जुड़े हैं। सभी जानते हैं, आप कौन हैं ? क्या कर रहे हैं ? आपकी ताकत कितनी है ? सिर्फ अपनी पीठ थपथपा कर साल भर घूमते रहते हैं। समाज की एकता व अखंडता भाड़ में जाये, आपको क्या लेना देना। खैर आप जैसे हैं, वैसे रहे परन्तु क्रोध करने के बजाए आप सोचे आप कहां पर हैं ? और समाज को कहां लाकर खड़ा कर दिया है ? इस हालात के लिए हम सब दोषी है।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तेमेषाम्
समानं मन्त्र भी मन्त्र वः समानेन वो हविषा जुहोमि''

अर्थ - मिलकर कार्य करने वालों का मंत्र समान होता है, अर्थात् वह परम्पर मंत्रणा करके एक निर्णय पर पहुंचते है। चित्त सहित उनका मन समान होता है।

हे ब्राम्हण बन्धु न तो हम खुद आगे बढ़ रहे, न उसे आगे बढ़ा रहे, जो सचमुच हमारे बीच योग्य है। आप सभी संगठन प्रमुख से निवेदन है कि आप सभी शांत मन से सोंचे। क्या सामाजिक एकता व बड़ा काम करने के लिये एकजुटता जरूरी नहीं ? कुछ बहनें कुछ भाईयों ने सच में आवश्यकतानुसार बहुत ही उत्कृष्ट कार्य किया है, जिसे नीचा दिखाने भस्मासुर पैदा हो गए हैं। बिना निर्माण के समाज में सम्मान नहीं होता। सामाजिक निर्माण लोगों का दिल जीतकर होता है न कि चन्दा मांगकर मनोरंजन करने से। आप सभी निर्विकार मन से सामाजिक एकता एवं कुछ बड़ा करने का सोचें। किसी को नीचा दिखाना मेरा उद्देश्य नहीं, इसे आप मेरे मन की व्यथा समझ सकते हैं। छोटे मन से बड़ा काम नहीं होता। इसीलिए शायद हम समाज का उत्थान नहीं कर पा रहे है।

मन बड़ा कर लें, तो खुद का भी उत्थान होगा और समाज का भी! वास्तव में मन की बेचैनी को इस प्रकार प्रकट करने का बस यही एक मात्र उद्देश्य है। एक बार बैठ कर मनन करें, सब एक हो जाएं और एक साथ समाज के विकास के लिए प्रयास करें।

- अविनाश शुक्ल

भविष्य में विद्यार्थियों के लिए योग में सुनहरा कैरियर : ज्ञानेश शर्मा

अंतर महाविद्यालय योग प्रतियोगिता उद्घाटन समारोह में योग आयोग अध्यक्ष का वक्तव्य

पंडित रविशंकर शुक्ल विश्व विद्यालय के तत्वावधान में विप्र महाविद्यालय द्वारा अंतरमहाविद्यालय योग प्रतियोगिता का उद्घाटन समारोह मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ योग आयोग के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा, समारोह के अध्यक्ष डॉ. विपिन चंद्र शर्मा (संचालक शारीरिक शिक्षा विभाग पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय) एवं विशिष्ट अतिथि रविंद्र मिश्रा (सहायक संचालक शारीरिक शिक्षा विभाग पंडित रविशंकर शुक्ल विश्व विद्यालय) की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ज्ञानेश शर्मा ने कहा - योग आयोग के अध्यक्ष होने के नाते योग छत्तीसगढ़ वासियों के दैनिक जीवन में शामिल हो इसका पूरा प्रयास किया जा रहा है। मेरे इस प्रयास में विद्यार्थी वर्ग और युवा वर्ग ही सबसे बड़े सहायक हो सकते है। वर्तमान समय में योग के प्रसार और विस्तार के साथ युवा के लिए सुनहरा कैरियर भी बना सकते हैं।जनवरी द्वितीय सप्ताह में छत्तीसगढ योग़ आयोग द्वारा ओपन स्पर्धा का आयोजन होने वाला है। यह भविष्य में एशियाई और ओलंपिक की तैयारी है।

अतः योग के विद्यार्थियों के लिए एक अच्छा अवसर है, आप पूरी तैयारी के साथ इसका लाभ उठाने का प्रयास करें। डॉ. विपिन चंद्र शर्मा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा छत्तीसगढ़ में योग के प्रसार के कारण तीसरे अंतर महाविद्यालय स्पर्धा में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ गई है। विद्यार्थी अपने दैनिक जीवन मे अपना रहे है। यह उनके स्वास्थ्य के साथ अध्ययन अध्यापन में भी सहायक सिद्ध हो रहा है। इस अवसर पर रविंद्र मिश्रा ने बताया कि ज्ञानेश शर्मा के योग आयोग के अध्यक्ष बनने के बाद से छत्तीसगढ़ में योग का प्रचार बढ़ गया है। जन-जन में योग उनके दैनिक जीवन का अनिवार्य अंग बने इसका पूरा प्रयास किया जा रहा है। इसके पूर्व डॉ. मेघेश तिवारी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि कोरोना महामारी के कारण लंबे अंतराल के बाद विप्र कॉलेज में अंतर महाविद्यालय योग प्रतियोगीता के रूप में खेल स्पर्धा का पहला आयोजन है। यह खुशी और गर्व की बात है। इस स्पर्धा द्वारा विश्व विद्यालय टीम का गठन किया जाएगा, जो भुवनेश्वर में आयोजित 25 से 28 अंतर विश्व विद्यालय प्रतियोगिता में हिस्सा लेगी। प्रतियोगिता में महाराजा अग्रसेन कॉलेज, महंत लक्ष्मीनारायण कॉलेज, पेलोटी कॉलेज, शा. संस्कृत महाविद्यालय, गुरूकुल कॉलेज, अग्रसेन कॉलेज पुरानी बस्ती, डिग्री गर्ल्स कॉलेज, शा. महाविद्यालय तिल्दा, शा. महाविद्यालय महासमुंद, दुर्गा कॉलेज, प्रगति कॉलेज, और विप्र कॉलेज से 24 छात्रा और 22 छात्र प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे है।

योग के साथ सात्विक आहार से ही स्वस्थ रहना संभव : ज्ञानेश शर्मा

विप्र कॉलेज में योग एवं आहार विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

6 मार्च - छत्तीसगढ़ युवा विकास संगठन संचालित विप्र कॉलेज में उत्तम जीवन शैली हेतु योगाभ्यास के साथ आहार की भूमिका विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि ज्ञानेश शर्मा (अध्यक्ष छत्तीसगढ़ योग आयोग) के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर ज्ञानेश शर्मा ने कहा कि कोरोना महामारी ने सिखा दिया है, कि हमारे लिए योग कितना महत्वपूर्ण है। मनुष्य जीवन में उत्तम स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है। और वर्तमान समय में योग और सात्विक एवं संतुलित आहार से ही स्वस्थ शरीर स्वस्थ मन की प्राप्ति संभव हैं। स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन होने से ही उत्तम जीवन शैली की प्राप्ति कर सकते है। इसके पूर्व अतिथियों का स्वागत करते हुए प्राचार्य डॉ. मेघेश तिवारी ने योग के साथ आहार के बारे में बताया कि वर्तमान समय में विशेष कर विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण विषय है। इसके बाद प्रथम योग सत्र में प्रायोगिक सेशन डॉ. उमाशंकर त्रिपाठी (विभागाध्यक्ष शारीरिक शिक्षा विभाग एमएलबी शासकीय महाविद्यालय ग्वालियर) ने लिया। उन्होनें विभिन्न योगाभ्यास के साथ शरीर और मन पर पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या की। इसके बाद तकनीकी सत्र में रांची विश्वविद्यालय के विषय विशेषज्ञ योगाचार्य परिणीता सिंग ने आहार और मन विषय पर व्याख्यान देते हुए बताया कि अन्न का सूक्ष्म रूप मन होता है। आहार द्वारा मन का निर्माण होता है।

अन्नमय कोष के तीन भाग स्थूल, सूक्ष्म और कारण होता है, स्थूल भाग में शरीर का निर्माण होता है। सूक्ष्मभाग में मन का निर्माण होता है और कारण द्वारा संस्कार का निर्माण होता है। इस प्रकार जैसा अन्न होगा, वैसा शरीर, मन और संस्कार का निर्माण होगा। जो मन को जीत लिया, वह जग को जीत लिया। यह तभी संभव है। जब हमारा आहार सात्विक और संतुलित हो, सात्विक और संतुलित आहार द्वारा ही सात्विक मन का निर्माण होगा। और इस मन की क्षमता को योग द्वारा बढ़ाकर हम मानव देह के उद्देश्य की प्राप्ति कर सकते है।

7 अप्रैल - छत्तीसगढ़ युवा विकास संगठन संचालित विप्र कॉलेज में उत्तम जीवन शैली हेतु योगाभ्यास के साथ आहार की भूमिका विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के द्वितीय दिवस प्रायोगिक सत्र डॉ. राजीव चौधरी (प्राध्यापक शारीरिक शिक्षा संकाय एवं विभागाध्यक्ष विधि विभाग पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर) के मार्गदर्शन में हुआ। डॉ. राजीव चौधरी ने योग के तीन हिस्से आसन, प्राणायाम और ध्यान का महत्व बताते हुए इसके तत्काल प्रभाव और दीर्घकालीन प्रभाव का विस्तार पूर्वक व्याख्या की। उन्होनें आसन कराने के बाद पृथ्वी मुद्रा, सूर्य मुद्रा और महामुद्रा का अभ्यास करवाया। साथ ही कपोल शक्ति विकास एवं सहजयोग ध्यान द्वारा मानसिक शक्ति बढ़ाने के उपाय बताएं। इसके बाद तकनीकी सत्र विषय विशेषज्ञ डॉ. साधना दुनेरिया (विभागाध्यक्ष योग विभाग बरकत उल्ला विश्वविद्यालय भोपाल मध्यप्रदेश) ने अष्टांगयोग द्वारा मन पर नियंत्रण से आहार संयम विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए बताया कि निरंतर योगाभ्यास से मन पर नियंत्रण पाया जा सकता है। और मन पर नियंत्रण से आहार संयम स्वतः हो जाता है। और जैसे-जैसे आहार सीमित और सात्विक होता जाता है।

योगाभ्यास का लाभ अधिक मिलने लगता है। आहार संयम से योग का लाभ बढ़ने लगता है। इस प्रकार आहार संयम और योगाभ्यास दोनों में उत्तरोत्तर विकास एक साथ समानांतर होता है।

8 अप्रैल - छत्तीसगढ़ युवा विकास संगठन संचालित विप्र कॉलेज में उत्तम जीवन शैली हेतु योगाभ्यास के साथ आहार की भूमिका विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन समारोह मुख्य अतिथि डॉ. गिरीशकांत पांडेय (कुल सचिव पंडित रविशंकर विश्व विद्यालय) एवं समारोह के अध्यक्ष डॉ. हरिद्र मोहन शुक्ला (आयुर्वेदाचार्य एवं प्राध्यापक शासकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय रायपुर) की गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस अवसर पर गिरीशकांत पांडेय ने कहा कि योग उत्तमजीवन शैली का एक मात्र मार्ग है। आज पूरा विश्व योग की ओर देख रहा है।एक भारतीय जिसे पद्म श्री पुरस्कार मिला, 126 वर्ष के उम्र में आहार और योग के माध्यम से पूर्णतः स्वस्थ और क्रियाशील है। यह भारतीय जीवन पद्धति से ही संभव है। भारत दस हजार वर्ष पुराना इतिहास वाला एक मात्र राष्ट्र है, जिसका आज भी अस्तित्व है। और यह सिर्फ हमारे योग आयुर्वेदिक और संस्कृति के कारण ही संभव हुआ है। भारत का भूगोल, मिट्टी, पानी मनुष्य के लिए शाकाहार होने में अनुकूल है। भारत के भौगोलिक वातावरण में शराब पीना हानिकारक है, हमारे लिए शुद्धजल अमृत के समान है। अतः हमें दूसरों की नकल ना करके अपने वातावरण के अनुकूल जीवन पद्धति अपनाना चाहिए जो योग और आयुर्वेदिक हमें बताता है। डॉ. हरीद्र मोहन शुक्ला ने बताया कि पृथ्वी पर मांसाहार जीव और शाकाहार जीव के बनावट को देखा जाए तो मनुष्य की बनावट शाकाहार जीव के समान है। अतः हमारी प्रकृति शाकाहार होने में है। शाकाहार ही संतुलित और सात्विक आहार हो सकता है। और इस सात्विक आहार के माध्यम से हम योग को सिद्ध कर सकते है। इसके पूर्व अतिथियों का स्वागत करते हुए प्राचार्य डॉ. मेघेश तिवारी ने बताया कि तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में विभिन्न विषय विशेषज्ञों के माध्यम से योग के विभिन्न चरणों का प्रायोगिक प्रयोग इसके प्रभाव की वैज्ञानिक व्याख्या से हम सब लाभान्वित हुए और कोरोना काल के बाद प्रथम हाइब्रिड कार्यशाला के माध्यम से ग्वालियर और भोपाल के विषय विशेषज्ञ से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके पूर्व कार्यशाला के अंतिम दिवस सुबह 8.30 बजे प्रायोगिक सत्र संजय शर्मा (साधक योग वीणा, सदस्य श्री सिद्धाश्रय) ने लिया। उन्होनें विभिन्न सूक्ष्म आसनों के माध्यम से प्राण शक्ति को जागृत करने का प्रायोगिक प्रदर्शन किया। इसके बाद तकनीकी सत्र में नींबू आर. कृष्णा (विभागाध्यक्ष यौगिक साइंस विभागाध्यक्ष ग्वालियर) ने अष्टांगयोग के चरण यम , नियम आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, धारणा और समाधि के वैज्ञानिक प्रभाव और पद्धति का विस्तार पूर्वक व्याख्या किया। कार्यशाला का संचालन डॉ. दिव्या शर्मा एवं डॉ. कंचन मिश्रा ने किया। अंत में आभार प्रदर्शन कार्यशाला के संयोजक डॉ. रंजना मिश्रा ने किया। कार्यशाला का लाभ समस्त प्राध्यापकों और विद्यार्थियों ने लिया साथ ही ऑनलाईन माध्यम से जुड़ कर देश के विभिन्न हिस्से के प्रतिभागियों ने भी इसका लाभ उठाया।

उड़ान

हिंदी में एक कहावत है... बाज के बच्चे मुँडेरों पर नहीं उड़ते....
जिस उम्र में बाकी परिंदो के बच्चे चिचियाना सीखते है, उस उम्र में एक मादा बाज अपने चूजे को पंजे में दबोज कर सबसे ऊंचा उड़ जाती है। पक्षियों की दुनिया में ऐसी Tough and tight training किसी और की नहीं होती।
मादा बाज अपने चूजे को लेकर लगभग 12 किमी. ऊपर ले जाती है, वह दूरी तय करने में उसे 7 से 9 मिनट का समय लगता है। यहां से शुरू होती है, उस नन्हें चूजे की कठिन परीक्षा। उसे अब यहां बताया जाएगा कि तू किस लिए पैदा हुआ है? तेरी ऊँचाई क्या है? तेरा धर्म बहुत ऊंचा है और फिर मादा बाज उसे अपने पंजो से छोड़ देती है। धरती की ओर ऊपर से नीचे आते वक्त लगभग 2 किमी. उस चूजे को आभास ही नहीं होता कि उसके साथ क्या हो रहा है। 7 किमी. के अंतराल के आने के बाद उस चूजे के पंख जो खुल जाते है।यह जीवन का पहला दौर होता है, जब बाज का बच्चा पंख फड़फड़ाता है। अब धरती से वह लगभग 3000 मीटर दूर है, लेकिन अभी वह उड़ना नहीं सीख पाया है। अब धरती के बिलकुल करीब आता है।जहां से वह अपने क्षेत्र को देख सकता है। अब उसकी दूरी धरती से महज 700/800 मीटर होती है, लेकिन उसका पंख अभी इतना मजबूत नहीं हुआ है कि वह उड़ सके। धरती से लगभग 400/500 मीटर दूरी पर उसे लगता है कि अब उसके जीवन की शायद अंतिम यात्रा है। फिर अचानक से एक पंजा उसे आकर अपनी गिरफ्त में लेता है और अपने पंखों के दरमियान समा लेता है।
यह पंजा उसकी मां का होता है, जो ठीक उसके ऊपर चिपक कर उड़ रही होती है और उसकी यह ट्रेनिंग निरंतर चलती रहती है, जब तक कि वह उड़ना नहीं सीख जाता। यह ट्रेनिंग एक कमांडो की तरह होती है, तब जाकर दुनिया को एक बाज मिलता है, जो अपने से 10 गुना अधिक वजनी प्राणी का भी शिकार करता है।

कहावत है... बाज के बच्चे मुँडेरों पर नहीं उड़ते... आप बेशक अपने बच्चे को अपने से चिपका कर रखिए, पर उसे दुनियां की मुश्किलों से रूबरू कराइए, उन्हें लड़ना सिखाइए। बिना आवश्यकता के भी संघर्ष करना सिखाइए। वर्तमान समय की अनन्त सुख सुविधाओं की आदत व अभिभावकों के बे-हिसाब लाड़ प्यार ने मिलकर, आपके बच्चों को ब्रायलर मुर्गे जैसा बना दिया है। जिसके पास मजबूत टंगड़ी तो है, पर चल नहीं सकता। वजनदार पंख तो है, पर उड़ नहीं सकता क्योंकि .... गमले के पौधे और जमीन के पौधे में बहुत बड़ा फर्क होता है। अपने बच्चों को कोमल नही, कठोर बनाएं। शस्त्र और शास्त्र दोनों की विद्या अवश्य दें, धर्मशास्त्रों के ज्ञान के अलावा अपने समृद्ध इतिहास से भी अवगत कराएं, ताकि जीवन के संग्राम में अपने आपको सुरक्षित रख सके। यही माता-पिता का प्रथम कर्तव्य है, एसी की हवा में तभी बैठने दें, जब वह गर्मी के झंझावातों में रहना सीख जाए, गाड़ी की चाबी तभी दें, जब वह कई किलोमीटर पैदल चलने की क्षमता व साईकिल चलाने हिचकिचाहट न रखता हो। यानी मिट्टी से जुड़कर जीना सीख लिया हो।

बौद्धिक संपदा अधिकार का संरक्षण वर्तमान समय की आवश्यकता

27 मार्च - भारत सरकार वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के उद्योग संवर्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग अधीन राजीव गांधी राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा प्रबंधन संस्थान नागपुर एवं विप्र महाविद्यालय रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय वेबीनार में बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण के उपाय पर सार गर्भित व्याख्यान से प्रतिभागी गण ट्रेडमार्क, कॉपीराइट, पेंटेट आदि के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी प्राप्त किए। वेबीनार में अतिथियों का स्वागत करते हुए प्राचार्य डॉ. मेघेश तिवारी ने कहा कि वर्तमान समय में बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण आवश्यक है। अतः संरक्षण नियमों और प्रावधानों की जानकारी सभी को होना आवश्यक है। समसामयिक विषय पर चर्चा से प्राध्यापक गण एवं विद्यार्थी अपने बौद्धिक संपदा के संरक्षण के उपाय जानेंगे। इसके बाद राजीव गांधी राष्ट्रीय संपदा प्रबंधन संस्थान नागपुर से विषय विशेषज्ञ पूजा मौली ने अपने व्याख्यान में बताया कि मनुष्य अपनी बुद्धि से कई तरह के अविष्कार और नई रचनाओं को जन्म देता है। उन विशेष अविष्कारों पर उसका पूरा अधिकार भी है लेकिन अधिकार संरक्षण हमेशा से चिंता का विषय भी रहा है। यहीं से बौद्धिक संपदा और बौद्धिक संपदा अधिकारों की बहस प्रारंभ होती है। यदि हम मौलिक रूप से कोई रचना करते हैं और इस रचना का किसी अन्य व्यक्ति द्वारा गैर कानूनी तरीके से अपने लाभ के लिये प्रयोग किया जाता है तो यह रचनाकार के अधिकारों का स्पष्ट हनन है। जब दुनिया में बहस तेज हुई कि कैसे बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा की जाए तब संयुक्त राष्ट्र के एक अभिकरण विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (World Intellectual Property Organization WIPO)
की स्थापना की गई। इस संगठन के प्रयासों से ही बौद्धिक संपदा अधिकार के महत्व को प्रमुखता प्राप्त हुई। इसके प्रयासों से ही बौद्धिक संपदा अधिकार के महत्व को प्रमुखता प्राप्त हुई। इसके बाद उन्होनें डिजाईन, ट्रेडमार्क, कॉपीराइट एवं पेंटेट आदि करवाने के लिए आवेदन की प्रक्रिया की विस्तार पूर्वक जानकारी दी। वेबीनार का संचालन संयोजक डॉ. दिव्या शर्मा एवं मोहित श्रीवास्तव ने किया। वेबीनार का लाभ बड़ी संख्या में प्राध्यापकगण एवं विद्यार्थियों ने लिया।

विप्र महिला मण्डल का महिला दिवस पर कार्यक्रम

शक्ति छत्तीसगढ़ी विप्र महिला ब्राह्मण समाज द्वारा योग आयोग के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा का सम्मान समारोह पं. आर.डी. तिवारी स्कूल में सम्पन्न हुआ

कार्यक्रम का प्रथम संचालन श्रीमती सुषमा ध्रुव तिवारी ने किया। संस्था की अध्यक्षता कर रही विभा तिवारी ने बताया कि संस्था द्वारा समय समय पर इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिससे सदस्यों में उत्साह बना रहता है।

आभार प्रदर्शन भारती किरण जी ने उपस्थित संगीनियों एवं श्री प्रदीप तिवारी जी का धन्वाद किया।

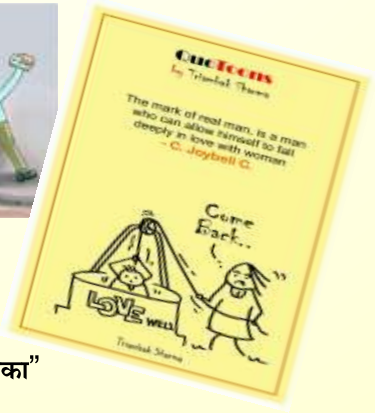

साभार "कार्टून वॉच पत्रिका"

योग, सनातन समिति और परंपरा युक्त युवा बनाएंगे आधुनिक भारत

ज्योर्तिमयानंद जी एवं कानिटकर जी के साथ योग समागम का सार

छत्तीसगढ़ युवा विकास संगठन संचालित विप्र कला वाणिज्य एवं शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय द्वारा बेमेतरा में आयोजित कार्यक्रम में आदरणीय ज्योर्तिमयानंद जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है। ऐसा ही समतुल्य विचार भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री मुकुल कानिटकर जी ने भी विश्वविद्यालय स्वाधीनता के दायित्व विषय पर आयोजित परिचर्चा में रखा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के श्री गजराज पगारिया प्रोफेसर के.पी. यादव, योग विभाग के सहायक श्री गोपेन्द्र साहू एवं छत्तीसगढ़ विभाग योग आयोग के अध्यक्ष श्री ज्ञानेश शर्मा जी उपस्थित रहे। शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय बेमेतरा के कार्यक्रम में आदरणीय ज्योर्तिमयानंद जी के साथ इस अवसर पर छत्तीसगढ़ योग आयोग के अध्यक्ष श्री ज्ञानेश शर्मा उपस्थि रहे।

नवभारत

जिला-बेमेतरा

योग सनातन संस्कृति और परंपरा की पहचान है: ज्योतिर्मयानंद

ग्राम नेवनारा के चंडी आश्रम के योग- अभ्यास कार्यक्रम में शामिल होंगे - योगेश तिवारी

फलेश मधुकर

बेमेतरा (लोक किरण) । छत्तीसगढ़ युवा विकास संगठन संचालित विप्र कला ,वाणिज्य एवं शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय द्वारा 8 जुलाई शुक्रवार को प्रातः 9.00 बजे पूज्य ब्रह्मचारी ज्योतिर्मयानन्द महाराज (प्रमुख, सफाद लक्ष्मेश्वरधाम आश्रम सलधा) के सानिध्य में एवं ज्ञानेश शर्मा (अध्यक्ष ,योग आयोग छत्तीसगढ़) के मुख्य आतिथ्य में सामाजिक सहभागिता के अंतर्गत चंडी आश्रम नेवनारा में स्वस्थ जीवन के लिए योग थीम पर योग- अभ्यास का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता किसान नेता योगेश तिवारी करेंगे। उपरोक्त जानकारी देते हुए प्राचार्य डॉ. मेधेश तिवारी ने बताया कि जागरूकता के लिए योग -अभ्यास में महाविद्यालय के छात्र सहित ग्रामीण क्षेत्र के नागरिक शामिल होंगे।

नवभारत

Rajdhani - 07 Apr 2022 - 07raj3

कैरियर से पहले युवा करें भारत माता की सेवा : कानिटकर

रायपुर विप्र कालेज द्वारा ग्राम नेवनारा में आयोजित त्रि-दिवसीय योगाभ्यास सत्र में श्री ज्ञानेश शर्मा ने योगाभ्यास के महत्व को समझाते हुए कहा कि योग में जीवन का महत्व प्राण वायु जैसा है, जितना ज्यादा और सहेज कर उपयोग करेंगे उतनी ज्यादा शारीरिक दृढ़ता बढ़ेगी। भाग दौड़ भरी जिंदगी में योग के महत्व को बढ़ायें और अपनी दिनचर्या में योग को शामिल करने का आह्वान किया इस आयोजन से ग्राम नेवनारा के निवासी तथा वहां के विद्यार्थी बेहद रोमांचित होकर अपना भरपूर सहयोग दिया और इस सहयोग के निरंतरता का संकल्प भी लिया। योग सत्र के अवसान के बाद सभी उपस्थिति जनों ने स्वयं को तंदरूस्त रखने के लिए योग को अपने जीवन में प्राथमिकता देने का संकल्प लिया।

गांधी हमारे जीवन में

हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। पर यह कैसा अमृत काल ? तेजी से हो रहे औद्योगीकरण, उपभोक्ता वाद की संस्कृति और गैर इंसानी दुनिया में इंसानों के बढ़ते हस्तक्षेप और मानव केंद्रित दृष्टिकोण के कारण हमारा पर्यावरण खतरे में है। प्राण वायु में जहर है, साथ ही जल, जंगल, जमीन भी विषैला हो गया है। आज मानव अपने अस्तित्व को खतरे में पा रहा है। ऐसी स्थिति में यह सोचना कि क्या आजादी गांधी जी ने दिलाया ? या आजादी दिलाने में गांधी जी का कितना योगदान है ? यह बहस करने के बजाए आज हमें यह सोचना और समझना होगा कि अगर हमको अपना जीवन बचाना है तो गांधी जी के बताए रास्ते पर चलना होगा। गांधी जी ने कहा है ''प्रकृति सभी मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है, परंतु किसी एक व्यक्ति के लालच को पूरा करने में असमर्थ साबित होगा'' वास्तव में यह विचार बताता है कि गांधीजी का सादा जीवन उच्च विचार वाला जीवन दर्शन ही इस पृथ्वी पर मानव जीवन के अस्तित्व को बचाए रखने में सक्षम है। अपनी आवश्यकताओं को पहचानना और न्यूनतम साधनों पर आधारित जीवन शैली गांधीजी के विचारों से जुड़े अलग-अलग पहलुओं में नैतिकता, आध्यात्मिकता और अहिंसा के शिक्षा से ही संभव है। किसी व्यक्ति के विकास का आधार भौतिकवाद या उपभोक्तावाद ना होकर अध्यात्मिक चेतना गांधी जी के विचारों के अध्ययन, चिंतन और मनन से ही संभव है। जिस विकास की तरफ दुनिया बढ़ रही है, इसने जो सभ्यता निर्मित की है, उसे गांधी जी ने शैतानी सभ्यता समझा है। उन्होंने लिखा कि अगर हिंदुस्तान को सच्ची आजादी पानी है और हिंदुस्तान के द्वारा दुनिया को भी! तो आज नहीं तो कल हमें गांव में ही रहना होगा, झोपड़ियों में। महलों में नहीं। कई अरब आदमी शहरों में और महलों में सुख से और शांति से नहीं रह सकते। इसमें मुझे जरा भी शक नहीं है, कि सत्य और अहिंसा का दर्शन केवल गांव की सादगी में ही संभव है। गांधीजी के लिए सच्ची आजादी का मतलब महज अंग्रेजी सत्ता की जगह भारतीयों की सत्ता नहीं है, अगर उपनिवेशवाद सोच और राजसत्ता की वहीं संरचना बरकरार रहती है तो यह कैसी आजादी ?

छत्तीसगढ़ शासन की नरवा, गरवा, घुरवा और बाड़ी योजना की सराहना पूरी दुनिया कर रही है, जो इसी ओर इशारा कर रहा है कि हम ग्रामीण परिवेश की ओर वापस लौटे, प्रकृति के साथ जुड़े, गांवो मे बसने वाले भारत के गांव को आत्मनिर्भर बनाएं।

आज हम गांधी जी के विचारों और संदेशों का चिंतन, मनन के मंथन से जो सार्थक व्यवहारिक उपाय प्राप्त होंगे उससे व्यक्तित्व निर्माण के साथ आत्मनिर्भर राष्ट्र निर्माण के दिशा की ओर अग्रसर होंगे। अर्थात् हमारे विचारों में, आचरण में, गांधी हमारे जीवन में तभी सच्चे अर्थों में हम अमृत महोत्सव मना पाएंगे।

डॉ. विवेक कुमार शर्मा

श्रद्धांजलि

श्रद्धांलति स्तंभ के माध्यम से छत्तीसगढ़ ब्राह्मण समाज के ब्रम्हलीन हुए सम्मानीय जनों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना एवं सहानुभूति के साथ दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं...

क्र.	नाम	पता	दिनांक
1	श्रीमती जामा बाई तिवारी पति स्व. रामाधीन तिवारी	रायपुर रविशंकर यूनिवर्सिटी परिसर तांदूल वाले	7 दिसम्बर 21
2	श्री विकास धर दीवान पिता स्व. आनंदधर दीवान	रायपुर, बिरबिरा वाले	8 दिसम्बर 21
3	श्री राजेश तिवारी पिता स्व. जनकलाल तिवारी	कंचनगंगा रायपुर, सल्धा वाले	13 दिसम्बर 21
4	श्रीमती सोहागा बाई पांडेय पति स्व. अंबिका प्रसाद पांडेय	रोहिणीपुरम रायपुर, हसदा वाले	9 जनवरी 22
5	श्री भूषण लाल मिश्रा	रायपुर, कचलोन सिमगा वाले	9 जनवरी 22
6	श्रीमती रमाकान्ति शुक्ला	अमलेश्वर रायपुर, बोरिया वाले	16 जनवरी 22
7	श्री कमल नारायण शुक्ला	ब्राह्मण पारा रायपुर, धनेली वाले	27 जनवरी 22
8	श्री संतोष चौबे	बेमेतरा, गनियारी वाले	9 फरवरी 22
9	श्रीमती निर्मला शर्मा पति स्व. रामाधर उपाध्याय	टेकारी करही	15 फरवरी 22
10	श्री प्रमोद कुमार दुबे	सुन्दर नगर रायपुर, देवादा वाले	21 फरवरी 22
11	श्री आलोक पांडेय	आमापारा रायपुर, तिल्दाडीह वाले	22 मार्च 22
12	श्री गनीराग शर्मा	कुशालपुर रायपुर, धुसेरा वाले	22 मार्च 22
13	श्रीमती रश्मि दुबे, पति श्री गिरीश दुबे	रायपुर, सिंगनपुर वाले	11 मई 22
14	श्री सच्चिदानंद पांडेय	चंगोराभाठा रायपुर, सोडरा वाले	13 मई 22
15	श्री गोवर्धन प्रसाद शर्मा	वसुंधरा नगर चंगोरा भाठा रायपुर	26 मई 22
16	श्रीमती रमा देवी शर्मा	ब्राह्मण पारा रायपुर, दरबा वाले	जून 22
17	श्रीमती मगन दीवान पति स्व. नीलकण्ठ दीवान	पार्थिवी कालोनी रायपुर बिरबिरा वाली	22 जून 22
18	श्री सुदीप पांडेय, पिता अशोक पांडेय	संतोषी नगर रायपुर, बम्हनी वाले	13 जुलाई 22
19	डॉ. अमरकान्त पांडेय	कृष्णा नगर, डंगनिया रायपुर	13 मार्च 22
20	श्री ब्रजेश मिश्रा	मर्रा वाले	23 जुलाई 22
21	श्रीमती शांता बाई शर्मा	रोहिणीपुरम रायपुर, नेवनारा	31 जुलाई 22
22	श्रीमती ममता पाण्डेय	रायपुर, बम्हनी	21 अगस्त 22
23	श्री अश्विनी शर्मा	रायपुर, टेकारी करही	28 अगस्त 22